नवनीत

ऑस्ट्रेलिया हिन्दी डाइजेस्ट

काव्य । साहित्य । शिक्षा । संस्कृति । दर्शन

Bharatiya Vidya Bhavan AUSTRALIA

जुलाई-सितंबर 2013, अंक 2 नम्बर 1-3 (Vol.2 No. 1-3)
ISSN 2200 - 7644

www.bhavanaustralia.org

शब्द-यात्रा

नवनीत भारत से

'श्री' का देवत्व और मनुष्यत्व

● आनंद गहलोत

संस्कृत में 'श्री' की महिमा अपरम्पार है. हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं में इस शब्द का गौरव धीरे-धीरे क्षीण हो गया है. यह किसी भी पुरुष के नाम के पहले एक अत्यंत साधारण औपचारिक, रस्मी सम्मानसूचक शब्द मात्र रह गया है. किसी भी अत्यंत गौरवपूर्ण शब्द के अर्थ- संकोच और पतन का यह सबसे बड़ा उदाहरण है.

संस्कृत में इस शब्द में निहित भावनाओं और अर्थों की भरमार थी. 'श्री' का अर्थ है- धन- दौलत, समृद्धि, ऐश्वर्य, प्राचुर्य, गौरक, महिमा, प्रतिभा, सौंदर्य, कांति, लालित्य, चारुता, विभूति, कल्याण, सौभाग्य. संस्कृत के विभिन्न लेखकों ने इस शब्द को विभिन्न अर्थों में प्रयुक्त किया. कुछ ने इस शब्द में देवत्व के दर्शन किये और अपनी पुस्तक का श्रीगणेश सबसे ऊपर केवल 'श्री' लिख कर किया. आज भी कुछ लोग पत्र में सबसे पहले ऊपर बीच में 'श्री' लिखते हैं. ऋग्वेद में यह शब्द आदरसूचक, महिमासूचक शब्द को रूप में इस्तेमाल हुआ है. जब हिंदू धर्म देवता-बहुल हो गया तो उन सभी देवी देवताओं के नाम के आगे 'श्री' शब्द जुड़ा जैसे श्री दुर्गा, श्रीराम, श्रीकृष्ण. 'श्री' कुछ के तो नाम का ही हिस्सा हो गया.

वैसे शब्द 'श्री' की आत्मा और शरीर दोनों ही स्त्रीलिंग हैं; पौराणिक साहित्य में 'श्री' लक्ष्मी देवी का एक नाम है. इस कारण विष्णु को श्रीपति श्रीकांत भी कहा जाता है. यद्यपि 'श्री' धन की देवी 'लक्ष्मी' का एक नाम है; लेकिन हिंदी भाषी व्यापारी लक्ष्मीजी को याद करते समय 'श्री लक्ष्मीजी सदासहाय' कहते और लिखते हैं.

'श्री' केवल देवी-देवताओं के ही आगे नहीं लगा, आदर भावना व्यक्त करने के लिए हमारी सांस्कृतिक विरासत के पवित्र ग्रंथों, के नाम के भी आगे लगा जैसे 'रामायण' 'श्रीरामचरित मानस', 'श्री भागवत'. कुछ ने 'श्रीमद्भागक्त' नाम लिखना शुरू किया.

मध्यकालीन युग में 'श्री' राजा-महाराजाओं के आगे लगने लगा. अब 'श्री' शिष्टाचार वश केवल वयस्क पुरुषों के नाम के आगे लगता है. बच्चों के नाम के आगे इसे लगाने की ज़रूरत नहीं समझी जाती है. यद्यपि 'श्री' से ही 'श्रीमान' शब्द गढ़ा गया; लेकिन कुछ विद्वानों की धारणा है कि हिंदी ने 'श्री' को 'श्रीमान' के संक्षिप्त रूप में ग्रहण किया है. 'श्री' यद्यपि स्त्रीलिंग शब्द है; लेकिन विवाहित स्त्रियों के लिए इन्हीं विद्वानों ने 'श्रीमती' शब्द प्रचलित किया. 'श्री' के लिए विवाहित और 'अविवाहित' का कोई बंधन नहीं.

साभार: नवनीत हिन्दी डाइजेस्ट, अगस्त 2013

कुलपति उवाच

राष्ट्रीय एकता का आधार

रा ष्ट्रीय विचारधाराओं का अध्ययन, मैं साठ से भी कुछ अधिक वर्षों से करता आया हूं. मेरा सम्बंध उस काल से है, जब 1902 में कालेज में भर्ती होते समय मैंने अपने आवेदनपत्र में स्वयं को भारतीय के अतिरिक्त और कुछ भी बताने से इंकार कर दिया था. लेकिन आज मैं यह दिन भी देख रहा हूं, जबकि एक अमरीकन यात्री के शब्दों में, 'आज देश में दक्षिण भारतीय, पंजाबी, बंगाली, एक गुजराती, एक मराठी के दर्शन तो होते हैं, परंतु एक भारतीय कहीं नहीं दिखाई पड़ता.'

संसार अब पहले जितना बड़ा नहीं रहा. अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था अब अनिवार्य हो चुकी है. संयुक्त राष्ट्रसंघ ने हमारे समक्ष एक विश्व-समाज की झांकी प्रस्तुत की है. यह सब सही है, पर पूर्णतः सही नहीं. राष्ट्रों के सह-अस्तित्व पर आधारित एक अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था की शीघ्र आवश्यकता अनुभव करने पर भी मुझे स्वयं को राष्ट्रवादी कहने में कोई संकोच नहीं. मुझे पक्का विश्वास है कि संघर्ष और अविश्वास के इस युग में सुदृढ़ अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था हम तभी स्थापित कर सकते हैं, जबकि राष्ट्रीय एकता की जड़ें ठोस और मज़बूत हों.

राष्ट्रीय एकता का आधार इन चार पायों पर ही रखा जा सकता है- वैधानिक एकता, मानसिक एकता, आर्थिक एकता और प्रतिकार की सामूहिक इच्छा. इनमें से प्रथम एकता का एक रूप संवैधानिक है. हमें याद रखना चाहिए कि संविधान हमारी एकता की पवित्र संस्कारविधि है और इसलिए पवित्र है. उसे हमें अपनी सर्व प्रथम श्रद्धा अर्पित करनी चाहिए. जो दल संविधान को नष्ट करने पर तुला है, वह राष्ट्रीय अपराध का भागी है.

(कुलपति के. एम. मुनशी भारतीय विद्या भवन के संस्थापक थे)

साभार: नवनीत हिन्दी डाइजेस्ट, अप्रैल 2013

महामहिम प्रणब मुखर्जी, भारत के राष्ट्रपति का राष्ट्र के नाम संदेश

भारत के 67वें स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने राष्ट्र के नाम संदेश में बुधवार को कहा कि पिछले लगभग सात दशकों से हम अपने भाग्य के नियंता खुद हैं। और यही वह क्षण है, जब हमें पूछना चाहिए कि क्या हम सही दिशा में आगे बढ़ रहे हैं?

मुखर्जी ने कहा कि आज के दिन हमारा ध्यान हमारे स्वतंत्रता संग्राम को सही दिशा प्रदान करने वाले राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और देश की स्वतंत्रता के लिए सर्वोच्च बलिदान देने वाले शहीदों सहित उन महान देशभक्तों की ओर जाता है, जिनके अदम्य संघर्ष ने हमारी मातृभूमि को लगभग 200 वर्षों के औपनिवेशिक शासन से मुक्ति दिलवाई।

उन्होंने कहा कि गांधीजी, न केवल विदेशी शासन से, बल्कि हमारे समाज को लम्बे समय से जकड़ कर रखने वाली सामाजिक बेडियों से भी मुक्ति चाहते थे। उन्होंने हर भारतीय को खुद पर विश्वास करने की तथा बेहतर भविष्य के लिए उम्मीदों की राह दिखाई। गांधीजी ने स्वराज, अर्थात सहिष्णुता तथा आत्म-संयम पर आधारित स्व-शासन का वादा किया। उन्होंने अभावों तथा दरिद्रता से मुक्ति का भरोसा दिलाया।

मुखर्जी ने कहा कि यदि हम उन मूल्यों को भुला देंगे जो गांधीजी के आंदोलन की बुनियाद थे, अर्थात, प्रयासों में सच्चाई, उद्देश्य में ईमानदारी तथा सबके हित के लिए बलिदान, तो उनके सपनों को साकार करना संभव नहीं होगा।

सीमा पर हमारे धैर्य की भी सीमा है।

राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने बुधवार को कहा कि पड़ोसी देशों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाने के भारत के निरंतर प्रयासों के बावजूद सीमा पर तनाव रहा है और नियंत्रण रेखा पर संघर्ष विराम का बार-बार उल्लंघन हुआ है, जिससे जनहानि हुई है। शांति के प्रति हमारी प्रतिबद्धता अडिग है, परंतु हमारे धैर्य की भी एक सीमा है।

भारत के 67वें स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने राष्ट्र के नाम संदेश में कहा कि पिछले दिनों आंतरिक और बाह्य सुरक्षा के लिए गंभीर चुनौतियां हमारे सामने आई हैं। छत्तीसगढ़ में माओवादी हिंसा के बर्बर चेहरे ने बहुत से निर्दोष लोगों की जानें लीं। आंतरिक सुरक्षा सुनिश्चित करने और राष्ट्र की क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा करने के लिए सभी आवश्यक कदम उठाए जाएंगे।

शुभ कामनाओं सहित
गंभीर वत्स ओ ऐ एम् अध्यक्ष, भारतीय विद्या भवन ऑस्ट्रेलिया

भारतीय राष्ट्र गान

जन गण मन

अधिनायक जय हे

भारत भाग्यविधाता

पंजाब सिन्धु गुजरात मराठा

द्राविड़ उत्कल बंगा

विन्ध्य हिमाचल यमुना गंगा

उच्छल जलधि तरंगा

तव शुभ नामे जागे

तव शुभ आशीष मांगे

गाहे तव जयगाथा

जन गण मंगलदायक जय हे

भारत भाग्यविधाता

जय हे, जय हे, जय हे

जय जय जय जय हे!

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः
महान विचारों को हर दिशा से हमारे पास आने दो

-ऋग्वेद 1-89-1

विषय-सूची

खिली बत्तीसी........ 8
लड़ाई का पहला क़दम........ 8
अशोक चक्रधर जी का ब्लॉग—चौं रे चम्पू........ 9
दो हाथ भी कैसे उठ गए?........ 9
अंतरराष्ट्रीय हिन्दी दिवस........ 12
मेरे प्रेरणास्त्रोत, मेरे पिता जी........ 15
अन्तिम प्यार........ 18
अमृत........ 19
संत कबीरदास दोहावली........ 25
उत्तर........ 26
मीरां बाई पदावली........ 27
अभ्यास से उन्नति........ 27
श्री गुरु ग्रंथ साहिब से........ 28
पुलिस-महिमा........ 30
15 अगस्त........ 32
भारती........ 35
वन्देमातरम........ 36
वसन्त : तीन बिम्ब........ 37
तुलसी दास के दोहे........ 40
अजहूँ चेति अचेत........ 42
एक चिनगारी घर को जला देती है........ 43
अमृतसर आ गया है........ 49
बच्चों का कोना........ 52
गोपाल और मिट्ठू........ 52
पाठक कहते हैं........ 54

भारतीय विद्या भवन ऑस्ट्रेलिया
निर्देशक मंडल

पदाधिकारी:

अध्यक्ष	सुरेन्द्रलाल मेहता
कार्यकारी सचिव	होमी नत्रीजी दस्तूर
प्रधान	शंकर धर
सचिव	श्रीधर कुमार कोंदेपुदी

अन्य निर्देशक:

कृष्ण कुमार गुप्ता, श्रीनिवासन वेंकटरमन, पल्लादम नारायणा सथानागोपाल, कल्पना श्रीराम, जगन्नाथन वीराराघवन, मोक्षा वत्स

अध्यक्ष: गंभीर वत्स ओ ऐ एम्

संरक्षक: महामहिम श्रीमती सुजाता सिंह (ऑस्ट्रेलिया में पूर्व भारत उच्चायुक्त), महामहिम प्रहत शुक्ला (ऑस्ट्रेलिया में पूर्व भारत उच्चायुक्त), महामहिम राजेंद्र सिंह राठौड़ (ऑस्ट्रेलिया में पूर्व भारत उच्चायुक्त)

मानद जीवन संरक्षक: महामहिम एम. गणपथी (ऑस्ट्रेलिया में पूर्व भारत कौंसुल जनरल और भारतीय विद्या भवन ऑस्ट्रेलिया के संस्थापक)

प्रकाशक व प्रबंध संपादक:
गंभीर वत्स ओ ऐ एम्
president@bhavanaustralia.org

संपादक :
कृष्ण कुमार गुप्ता

भाषा संपादक :
परवीन दहिया

विज्ञापन हेतु:
pr@bhavanaustralia.org
Bharatiya Vidya Bhavan Australia
Suite 100 / 515 Kent Street,
Sydney NSW 2000

यह जरुरी नहीं है कि नवनीत ऑस्ट्रेलिया हिन्दी डाइजेस्ट में योगदानकर्ताओं के विचार, नवनीत ऑस्ट्रेलिया हिन्दी डाइजेस्ट या संपादक के विचार हों। नवनीत ऑस्ट्रेलिया हिन्दी डाइजेस्ट किसी भी योगदान लेख और प्रस्तुत पत्र को संपादित करने का अधिकार सुरक्षित रखता है। *कॉपीराइट:* प्रस्तुत सभी विज्ञापन और मूल संपादकीय सामग्री भवन ऑस्ट्रेलिया की संपत्ति है और इन्हें कॉपीराइट के मालिक की लिखित अनुमति बिना पुन: पेश नहीं किया जा सकता।

नवनीत ऑस्ट्रेलिया हिन्दी डाइजेस्ट: अंक 2 नंबर 1 - 3, ISSN 2200 – 7644
मुख-पृष्ठ: सायंतन चक्रवर्ती, इंडिया एम्पायर, नई दिल्ली, भारत

Australian National Anthem

**Australians all let us rejoice,
For we are young and free;**

**We've golden soil and wealth for toil;
Our home is girt by sea;**

**Our land abounds in nature's gifts
Of beauty rich and rare;**

**In history's page, let every stage
Advance Australia Fair.**

**In joyful strains then let us sing,
Advance Australia Fair.**

**Beneath our radiant Southern Cross
We'll toil with hearts and hands;**

**To make this Commonwealth of ours
Renowned of all the lands;**

**For those who've come across the seas
We've boundless plains to share;**

**With courage let us all combine
To Advance Australia Fair.**

**In joyful strains then let us sing,
Advance Australia Fair.**

लड़ाई का पहला क़दम

(हम यदि सभ्य और प्रबुद्ध हैं तो युद्ध क्यों करते हैं)

अब जब
विश्वभर में सबके सब,
सभ्य हैं, प्रबुद्ध हैं
तो क्यों करते युद्ध हैं?

कैसी विडंबना कि
आधुनिक कहाते हैं,
फिर भी देश लड़ते हैं
लहू बहाते हैं।

एक सैनिक दूसरे को
बिना बात मारता है,
इससे तो अच्छी
समझौता वार्ता है।

एक दूसरे के समक्ष,
बैठ जाएं दोनों पक्ष।
बातचीत से हल निकालें,
युद्ध को टालें!
क्यों श्रीमानजी,
आपका क्या ख़याल है?
श्रीमानजी बोले—
यही तो मलाल है।

दोनों पक्षों के पास
अपने-अपने तर्क हैं,
दोनों अपने हित में
ज़रूरत से ज़्यादा सतर्क हैं।

डिप्लोमैटिक भाषा
डिप्लोमैट को खलेगी,
बातचीत होगी
पर हर बार टलेगी,

बातचीत से कुछ होगा
आपका भरम है,
दरअसल, ये बातचीत ही तो
लड़ाई का पहला क़दम है।
—अशोक चक्रधर

दो हाथ भी कैसे उठ गए?

—चौं रे चम्पू! बात अधूरी-सी रह गई। बरखा नैं का पूछी?

—'वी द पीपुल' कार्यक्रम में 'अंग्रेज़ी हैं हम?' चर्चा के दौरान बरखा दत्त ने स्टूडियो में आए विशेषज्ञों और ऑडिएंस में बैठे युवाओं से पूछा कि कितने लोग हिन्दी अख़बार पढ़ते हैं? सात विशेषज्ञों में से चार-पांच के हाथ उठे और दो उठे सौ-सवा-सौ युवाओं के बीच से। युवाओं में जिस एक युवती ने हाथ उठाया था, उसके प्रति किसी

प्रशंसा भाव के बजाय बरखा ने उससे पूछा कि तुम अपनी इच्छा से पढ़ती हो या परिवार के लोग बाध्य करते हैं?

—अच्छा! ऐसै पूछी?

—हां चचा! उनके सवाल से ही तय हो गया कि यह स्टूडियो हिन्दी के प्रति सहिष्णु तो नहीं ही है। माने बैठा है कि 'अंग्रेज़ी हैं हम'। प्रश्नवाचक चिन्ह लगाना बेकार था। मुझे लगा कि

'हिन्दी हैं हम' की गुंजाइश यहां नहीं है। हिन्दी अख़बार के लिए दो हाथ भी कैसे उठ गए? मैं तो डर गया, पर वह लड़की आत्मविश्वास के साथ अंग्रेज़ी में बोली, हिन्दी मेरी मातृभाषा है, परिवार का कोई दबाव नहीं है। बरखा ने हाथ न उठाने वाले लोगों की तरफ इशारा करते हुए पलटकर कहा, लेकिन इतने सारे लोग तो नहीं पढ़ते! युवती ने अब सहमते हुए कहा, हिन्दी अखबार न पढ़ने वाले ऐसा समझते हैं कि इनमें मसाला ज़्यादा होता है, हिन्दी अख़बारों को गॉसिप के लिए पढ़ा जाता है, जबकि अच्छी ख़बरें अंग्रेज़ी के अख़बार में ही होती हैं। सूमसाम सी बैठी हुई उस सभा में सबने ठहाका लगाया।

—मतलब, हिन्दी के अखबारन में सिरफ गप्प हौंयं का?

—भला हो कि सम्भाल लिया पवन वर्मा ने और कहा कि मैं तो कहूंगा, अंग्रेज़ी अखबारों की अपेक्षा हिन्दी के कुछ

अख़बारों के संपादकीय कई बार भाषा, व्याकरण और कथ्य की दृष्टि से कहीं ज़्यादा सारगर्भित होते हैं। इसलिए बात को सतही नहीं, ऐतिहासिक तौर पर देखा जाना चाहिए। फिर मैंने भी, जितना समय मुझे मिला, हिन्दी की वकालत की।

—तैंनें का कही?

—मैंने कहा कि हिन्दी पूरे विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक भाषा है। साउथ एशिया में प्रिंट मीडिया और इलैक्टॉनिक मीडिया अगर सबसे बड़ा किसी भाषा में है तो वह हिन्दी में है। हिन्दी न केवल भारत में बल्कि सूरीनाम, गुयाना, त्रिनिदाद, फीजी, मॉरिशस, यू.के., अमेरीका में प्रवासी भारतीयों के बीच बोली, सुनी और समझी जाती है। अंग्रेज़ी में कामकाज करने के बाद जब आप बाहर निकलते हैं तो हिन्दी में बात करते हैं। मैं जानता हूं कि इस चर्चा के बाद जब आप नीचे उतरेंगे बहुत से लोग हिन्दी में ही बात करते हुए जाएंगे। सवाल भाषा के वर्चस्व की लड़ाई का नहीं होना चाहिए। भाषाएं हमारे जीवन के लिए हैं, न कि जीवन भाषाओं की लड़ाई को समर्पित किया जाए। भाषाएं विकास का रास्ता बनाती हैं और अगर भाषाओं का ये मेल-जोल पनप रहा है तो इससे कोई ख़तरा नहीं है। कोई भी भाषा एक जैसी कभी नहीं रही। शुद्धतावादी दृष्टिकोण ग़लत है। कबीरदास ने कहा था 'कबिरा संस्कृत कूपजल, भाखा बहता नीर'। संस्कृत भाषा आज नहीं बोल सकते, भले ही राजनाथ सिंह कितना ही चाहें, क्योंकि चलन में नहीं है। और फिर संस्कृत से सीधे हिन्दी नहीं आ गई है। संस्कृत ने पाली, प्राकृत, अपभ्रंश के रास्ते, भारोपीय भाषाओं का एक विराट ताना-बाना बुन दिया है, जिसमें बांग्ला, उड़िया, असमिया, हिन्दी, गुजराती, मराठी सारी भाषाएं आती हैं। अगर हम ये जान जाएं कि हमारी अधिकांश भाषाओं का परिवार एक ही है तो आपस का तनाव ही समाप्त हो जाएगा।

—अरे जब इत्ती बात बोलि आयौ तौ फिर डरिबे की का जरूरत ऐ?

—मैंने अपने आपसे भी पूछा, क्या हम अंग्रेज़ी के दुश्मन हो जाएं? नहीं, हम अंग्रेज़ी के दुश्मन क्यों होंगे भला? ये जो युवा बैठे हुए हैं या इन जैसे और जो युवा हैं, जो अंग्रेज़ी के कारण भारत का नाम रौशन कर रहे हैं, उनकी ईमानदारी पर शक कैसे कर सकते हैं। विडम्बना तो यही है कि हम पूरे देश की प्राथमिक शिक्षा में हिन्दी को अनिवार्य नहीं कर पाए।

—हां, लल्ला! जे बात तौ है।

—**अशोक चक्रधर**, उपाध्यक्ष, हिन्दी अकादमी, दिल्ली सरकार एवं उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिन्दी शिक्षण मंडल (मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, यूट्यूब पर 'केन्द्रीय हिन्दी संस्थान' के बारे में इस लिंक पर जाएं:

http://www.youtube.com/watch?v=BIK4lk_XiJM

भारत का कश्मीर

कसम है खूने गाँधी की
कसम खूने शहीदां की
कसम जनता के सपनों की
कसम मजदूरो देहकां की
ये मुमकिन हैं के सूरज का उभरना बंद हो जाए
समुंदर खुश्क हो जाएं, हिमाला दबके रह जाए
और ये भी मुमकिन है
बरसना छोड़ दे अब्रे बहारां भी
चहकना छोड़ दे शाहे गुलिस्तां भी
गरजना छोड़ दे शेरेए बयाबां भी
ये सब मुमकिन है, लेकिन ये कभी मुमकिन नही
कोई भी जम्मू-ओ-कश्मिर हमसे ले नहीं सकता
वतन की एकता को फिर से धक्का दे नहीं सकता
ये दो कोमों का नारा फिर से जिंदा हो नहीं सकता
किसी कीमत से बटवारा दोबारा हो नहीं सकता
कसम अपने जवानों की
कसम है लोकशाही की
कसम है अपने वादों की
कसम भारत की शक्ति की
कोई भी जम्मू-ओ-कश्मिर हमसे ले नहीं सकता
वतन की एकता को फिर से धक्का दे नहीं सकता।

डा. रफीक जकारिया, कानून, शिक्षा, पत्रकारिता, राजनीति और इस्लामी अध्ययन में प्रतिष्ठित, बंबई विश्वविद्यालय के कुलपति के स्वर्ण पदक विजेता थे। लंदन विश्वविद्यालय से पी. एच. डी. प्राप्त डा. रफीक अपने छात्र जीवन से ही आजादी की लड़ाई में सक्रिय थे। वह अंतरराष्ट्रीय ख्याति के एक विद्वान थे और एक दर्जन से अधिक पुस्तकों के लेखक थे। डॉ. रफीक जकारिया का मुंबई में 9 जुलाई 2005 को निधन हो गया।

स्रोत: विभाजन का मूल्य यादें और कुछ विचार, डा. रफीक जकारिया, भवन पुस्तक विश्वविद्यालय, मुंबई, भारत

अंतरराष्ट्रीय हिन्दी दिवस

हिन्दी दिवस भारत व विश्व के अनेक देशों में प्रत्येक वर्ष सितम्बर 14 को मनाया जाता है। हिन्दी, विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है और अपने आप में एक समर्थ भाषा है। प्रकृति से यह उदार ग्रहणशील, सहिष्णु और भारत की राष्ट्रीय चेतना की संवाहिका है। भारत की स्वतंत्रता के बाद 14 सितंबर, 1949 को संविधान सभा ने एक मत से यह निर्णय लिया कि हिन्दी की खड़ी बोली ही भारत की राजभाषा होगी। इसी महत्त्वपूर्ण निर्णय के महत्त्व को प्रतिपादित करने तथा हिन्दी को हर क्षेत्र में प्रसारित करने के लिये राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के अनुरोध पर सन् 1953 से संपूर्ण भारत में 14 सितंबर को प्रतिवर्ष हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

राष्ट्रभाषा

विश्व की एक प्राचीन, समृद्ध तथा महान भाषा होने के साथ ही हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा भी है, अतः इसके प्रति अपना प्रेम और सम्मान प्रकट करने के लिए ऐसे आयोजन करना स्वाभाविक है। इस दिन विभिन्न शासकीय-अशासकीय कार्यालयों, शिक्षा संस्थाओं आदि में विविध गोष्ठियों, सम्मेलनों, प्रतियोगिताओं तथा अन्य कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। कहीं-कहीं ‘हिन्दी पखवाडा’ तथा ‘राष्ट्रभाषा सप्ताह’ इत्यादि भी मनाये जाते हैं।

विश्व स्तर पर हिन्दी दिवस समारोह

हिंदी दुनिया में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली 3 भाषाओं में शामिल है। 10 जनवरी 2006 को प्रति वर्ष विश्व हिन्दी दिवस के रूप मनाये जाने की घोषणा के बाद पहली बार विश्व हिन्दी दिवस मनाया गया। इसका उद्देश्य विश्व में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिये जागरूकता पैदा करना तथा हिन्दी को अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में पेश करना है। विदेशों में भारत के दूतावास इस दिन को विशेष रूप से मनाते हैं। सभी सरकारी कार्यालयों में विभिन्न विषयों पर हिन्दी में व्याख्यान आयोजित किये जाते हैं। अमेरिका, कनाडा, इंग्लैंड जैसे प्रमुख देशों के अलावा विश्व के अन्य देश जैसे ऑस्ट्रेलिया आदि में अंतरराष्ट्रीय हिन्दी दिवस एक मुख्य समारोह के रूप में मनाया जाने लगा है। भारतीय विद्या भवन ऑस्ट्रेलिया, एक गैर सरकारी सांस्कृतिक संगठन मुख्य रूप से संसद भवन, सिडनी में अंतरराष्ट्रीय हिन्दी दिवस मनाता रहा है।

हिन्दी दिवस ऑस्ट्रेलिया में

हिन्दी-दिवस के उपलक्ष्य में शनिवार, 21 सितम्बर 2013 को मेलबोर्न में साहित्य-सन्ध्या का आयोजन किया जा रहा है। काव्यसंग्रह “देशान्तर” (प्रवासी भारतीयों की कवितायें: संपादक उषा राजे सक्सेना) जिसमें आस्ट्रेलिया के 9 कवियों की कवितायें भी शामिल हैं, का विमोचन किया जा रहा है। डा. नलिन शारदा, हरिहर झा, सुभाष शर्मा और मनमोहन सिंह द्वारा आयोजित साहित्य-सन्ध्या में कविता, गीत, हिन्दी के महत्व पर साहित्यिक-संवाद आदि कार्यक्रम भी होंगे। इस अवसर पर साहित्य संगम के कार्यक्रम के अतिरिक्त, ‘हिंदी शिक्षा संघ (ऑस्ट्रेलिया)’, ऑस्ट्रेलिया में हिंदी-शिक्षा की रजत जयंती और 12वीं कक्षा में हिंदी को मान्यता प्राप्त होने की 20वीं वर्षगाँठ एक साथ मना रहा है। हिंदी शिक्षण के लिए सबसे पहला केन्द्र ‘आधुनिक भाषा का शनिवार स्कूल’ (अब भाषा का विक्टोरियन स्कूल) मेलबोर्न में 1986 में स्थापित किया गया था। हिन्दी को 1993 में एक (वी सी इ) विषय के रूप में मान्यता दी गई थी। यह 'शिक्षक दिवस' (5 सितंबर) और 'हिंदी दिवस' (14

सितंबर) के बीच एक शुभ अवसर पर मनाया जा रहा है। इस अवसर पर एक सांस्कृतिक कार्यक्रम 'छात्रों ने अपनी हिंदी कक्षाओं में क्या सीखा है' यह दिखाते हुए प्रस्तुत किया जाएगा और अतीत और वर्तमान हिन्दी छात्रों और शिक्षकों को एक साथ मिलने का अवसर प्रदान किया जाएगा।

इंडो-ऑस्ट्रेलियन बालभारती विद्यालय हिंदी स्कूल (आई. ऐ. ऐ. बी. बी. वि.) में पंद्रह सितम्बर को हिंदी दिवस मनाया जाएगा। पिछले साल विद्यालय द्वारा आयोजित लेख प्रतियोगिता "व्यक्ति जिसकी मैं सबसे अधिक प्रशंसा करता हूँ" में 'मेरी नानी' (पल्लवी अरोड़ा, प्रथम), 'मेरे पिता' (हार्दिक त्रिवेदी, द्वितीय), 'मेरे मामू' (सौम्य काकरिया, तृतीय), 'मदर टेरेसा' (पल्लवी सिंह, तृतीय) को पुरस्कार दिए गए।

हिंदी दिवस के अवसर ऑस्ट्रेलिया की भारतीय साहित्य एवं कला सोसायटी 14 सितम्बर को एप्पिंग, न्यू साउथ वेल्स में 'बॉलीवुड फिल्मों में रोमांस की हिन्दी कविता' और एक चयनित ऑस्ट्रेलियाई हिन्दी कवियों का कवी सम्मलेन प्रस्तुत करेगी।

अनिवासी भारतीय, अपनी संस्कृति और मूल्यों पर पकड़ पाने की कोशिश करते हैं और पाते हैं कि खुद को हिंदी के साथ जोड़ने के द्वारा वे इसमें सक्षम हैं और यह उन सभी को एकजुट करती है। अंतरराष्ट्रीय हिन्दी दिवस हमारी संस्कृति का उत्सव है। भाषा विकास क्षेत्र से जुड़े वैज्ञानिकों की भविष्यवाणी हिंदी प्रेमियों के लिए बड़ी सन्तोषजनक है कि आने वाले समय में विश्वस्तर पर अन्तरराष्ट्रीय महत्त्व की जो चन्द भाषाएं होंगी उनमें हिंदी भी प्रमुख होगी।

-परवीन दहिया, भारतीय विद्या भवन ऑस्ट्रेलिया

अनमोल वचन

- अहिंसा एक विज्ञान है। विज्ञान के शब्दकोश में 'असफलता' का कोई स्थान नहीं। ~ महात्मा गांधी
- मनुष्य अपने गुणों से आगे बढता है न कि दूसरों कि कृपा से। ~ लाला लाजपतराय
- ज्ञानी वह है, जो वर्तमान को ठीक प्रकार समझे और परिस्थिति के अनुसार आचरण करे। ~ विनोबा भावे
- जो मन की पीड़ा को स्पष्ट रूप में नहीं कह सकता, उसी को क्रोध अधिक आता है। ~ रवीन्द्रनाथ ठाकुर
- जो मनुष्य क्रोधी पर क्रोध नहीं करता और क्षमा करता है वह अपनी और क्रोध करनेवाले की महासंकट से रक्षा करता है। ~ वेदव्यास
- बहता पानी और रमता जोगी ही शुद्ध रहते हैं। ~ स्वामी विवेकानंद

मेलबर्न में हिन्दी दिवस २०१३

बीते वर्षों की भांति इस वर्ष भी मेलबर्न के हिन्दी प्रेमी सितम्बर माह में हिन्दी दिवस मना रहे है। इस वर्ष यह कार्यक्रम शनिवार २१ सितम्बर २०१३ को संपन्न होगा। मेलबर्न में साहित्य संगम के तत्वाधान में हर दूसरे महीने के एक शनिवार को साहित्य संध्या का आयोजन होता है। सितम्बर की विशेष साहित्य संध्या को “हिन्दी दिवस” को समर्पित किया जाता है, तथा प्रयास किया जाता है कि इसमें भाग लेने वाले लोग हिन्दी की अराधना करें और आपस में रचनाएँ सुन कर व सुनाकर हिन्दी को सम्मान दें ताकि हिन्दी फूले फले और आगे बढे।

हिन्दी प्रेमी अपनी भाषा में कविता, कहानी या लेख लिख कर अपने भाव अपनी भाषा में लोगों के समक्ष प्रस्तुत करते है। इसीलिये साहित्य संध्या हिन्दी की प्रतिभा के प्रदर्शन का केंद्र न होकर मातृभाषा के प्रति प्रेम का एक दर्पण है। यह प्रेम प्रदर्शन अपने एकाकीपन को अपने जैसे दूसरे लोगों के साथ बांटने का भी एक अवसर देता है। अधिकतर लोग कविता के रूप में अपने भाव प्रकट करते हैं। साहित्य संध्या का उद्देश्य होता है “अपने लोग अपनी बातें”, और इस माध्यम से लोग अपनी कला और अपने भावों को दूसरे लोगों के साथ बाँटते चले आये हैं। इन प्रयासों से कुछ अच्छे अच्छे कवि तथा कहानी कार उभर कर आये है, जिन्होंने आस्ट्रेलिया के प्रतिष्ठित हिन्दी कवियों और लेखकों में अपना नाम जोड़ा है।

साहित्य संध्या लगभग दो दशकों से निरंतर अपने इन प्रयासों में सफल होती आ रही है। इसकी ही देन है कि लोगों ने कविता कहानियाँ देश विदेश के पत्र पत्रिकाओं में संपादित की, और आस्ट्रेलिया के हिन्दी के इतिहास में कुछ पन्ने जोड़े। “बूम रैंग” जैसे कविता संग्रह में सहयोग, तथा “गुलदस्ता” जैसी द्विभाषीय उर्दू - हिन्दी कविता संग्रह में योगदान इसके अनुपम उदाहरण हैं।

अब आस्ट्रेलिया से एक हिन्दी का कहानी संग्रह संपादित होने जा रहा है, जिसमें साहित्य संगम से जुड़े हिन्दी प्रेमी अपना विशेष योगदान दे रहे हैं। प्रवासी भारतीयों की कविताओं का संग्रह “देशांतर”, जो ब्रिटेन की एक हिन्दी संस्था से जुडी उषा राजे सक्सेना ने संपादित किया, यह २०१३ में हिन्दी अकादमी दिल्ली द्वारा प्रकाशित किया गया है। इस संग्रह में मेलबर्न सहित आस्ट्रेलिया के ९ कवियों का योगदान है। देशांतर का मेलबर्न विमोचन भी इस वर्ष के हिन्दी दिवस समारोह में होगा।

यद्यपि कविता में हर व्यक्ति को रूचि नहीं होती, पर हर व्यक्ति के ह्रदय में कविता छुपी होती है, जब “अपने लोग और अपनी बातें” होती हैं तब साहित्य संध्या में वह उभर कर आती है, और मन में छिपे कवि को जन्म देती हैं। साहित्य संध्या वह प्रयास है जो अपने भाव, अपनी संस्कृति, अपने विचार, अपनी भाषा और अपनी जड़ों से जुड़े प्रश्न अपने लोगों के साथ बाटने में सफल हुई है।

साहित्य संध्या से जुड़े लोग आस्ट्रेलिया में हिन्दी के प्रति अपना प्रेम दर्शा रहे हैं तथा हिन्दी के प्रचार प्रसार में जुटे लोगों का हाथ बटा रहे हैं। मेलबर्न में साहित्य संध्या, साहित्य संगम का प्रर्याय बन चुकी है, और इस माध्यम से समय समय पर विशेष कार्यक्रमों का आयोजन होता है, जैसे कि कवि सम्मलेन, पुस्तकों का विमोचन, भारत से आये कवियों का सम्मान एवं विशेष त्योहारों और पर्वों पर कविता और लेखों के माध्यम से अपनी संस्कृति से जुड़े रहने का प्रयास। इसी प्रकार के अन्य कई कार्यक्रम भी साहित्य संध्या का अटूट अंग है।

साहित्य संध्या में भाग लेने वाले लोग इसे संस्था ना समझ कर एक संगम या मिलने का स्थान मानते हैं, तथा सेवाभाव से भाग लेते हैं, न कि किसी संस्था के संचालन के रूप में। यही कारण है कि नित्य नए लोग इस तीर्थ यात्रा से जुड़ते जा रहे हैं, और साहित्य संध्या अपने प्रयोजन में सफल हो रही है। साहित्य संगम की गतिविधियों और कार्यक्रमों का विवरण http://www.sahityasangam.org/ वेबसाईट पर प्राप्त किया जा सकता है।

इस वर्ष फिर सभी हिन्दी प्रेमियों को साहित्य संगम की ओर से हिन्दी दिवस पर बधाई।

डा. सुभाष शर्मा, साहित्य संगम, (साहित्य संध्या), मेलबर्न

मेरे प्रेरणास्त्रोत, मेरे पिता जी

जीवन में काफी लोगों ने मुझ पर अपना प्रभाव छोड़ा है। कुछ ने उनके अपने बड़े दिल से और कुछ ने उनके अपने मूल्यों से। कुछ ने उनके बदलाव लाने की क्षमता के कारण तो कुछ ने उनके अपने मजबूत दृढ़ संकल्प की वजह से।

इन सब में से अगर कोई ऐसा है जिसने मेरा दुनिया देखने का नजरिया बदला हो, जिसने मुझे सबसे ज्यादा सिखाया हो व प्रभावित किया हो तो वह होंगे मेरे आदरणीय पिता जी।

पता नहीं कहाँ से शुरू करूँ? वे एक संयुक्त परिवार में पले बड़े थे और इसी लिए मैं मानता हूँ कि उनके संस्कार इतने अच्छे हैं । साथ रहकर उन्होंने अपना सब कुछ बाँटना सीखा और सबकी भलाई चाही और यही बात उन्होंने मुझे सिखाई। सच में यहाँ के कुछ बच्चों को देख कर बेहद बुरा लगता है कि वे अपने माता-पिता का आदर करना भी नहीं जानते ।

उनकी सबसे अच्छी बात, जो मुझे हमेशा उनको मेरी आँखों में रखती है, वह है उनके माता-पिता की और उनका प्रेम, झुकाव व सम्मान। वह उनका इतना आदर करते हैं कि भले कुछ भी हो जाये वह उनका साथ कभी नहीं छोड़ेंगे। चाहे वे सही हों या गलत, वे हमेशा उनका साथ देतें हैं और उनका आशिर्वाद पातें हैं।

मुझ पर भी उन्होंने कुछ कम ध्यान नहीं दिया है। चाहे मेरी पहली क्रिकेट का प्रस्तुतीकरण हो या मेरी टेनिस का अंतिम गेम हो, वो मेरा साथ देने के लिए मेरे साथ रहतें हैं । कदम-कदम पर उन्होंने मुझे सहारा दिया परन्तु जब मैं दस साल का था, उन्होंने मुझे, मेरी माँ और बहन को ऑस्ट्रेलिया भेजने का निश्चय किय। तीन साल हम ऑस्ट्रेलिया में अकेले उनके बगैर रहे।

अक्सर अपने जन्मदिन, साक्षात्कार या प्रस्तुतीकरण में मैं माँ से पूछता 'पिता जी क्यों नहीं आये हैं?' और वे कहती, 'वे वहाँ तुम्हारे लिए हैं, सिर्फ तुम्हारे लिए'। मैं कुछ नहीं बोलता और अकेले अपने कमरे में जाकर रोने लगता । मैं शायद बहुत छोटा था समझने के लिए, पर अब मैं समझदार हूँ । उन्होंने यह मेरे लिए किया, मेरी पढाई के लिए, मेरे उज्जवल भविष्य के लिये।

जिंदगी की असली ख़ुशी दूसरों के लिए कुछ करना है। आप मेरे प्रेरणास्त्रोत हैं जिन्होंने मुझे आत्मनिर्भरता, आत्मबल व आत्म-सम्मान से जीना सिखाया है।

निबंधकार -हार्दिक त्रिवेदी, ग्लेन वेवरली माध्यमिक कॉलेज

शुभ कामनाओं सहित

माला मेहता, OAM, मानद समन्वयक संस्थापक/शिक्षक, IABBV हिन्दी स्कूल, सिडनी ऑस्ट्रेलिया

Pravasi Bharatiya Divas (Overseas Indian Day)

History

Pravasi Bharatiya Divas (PBD) is celebrated on 9th January every year to mark the contribution of Overseas Indian community in the development of India. January 9 was chosen as the day to celebrate this occasion since it was on this day in 1915 that Mahatma Gandhi, the greatest Pravasi, returned to India from South Africa, led India's freedom struggle and changed the lives of Indians forever.

The decision to celebrate Pravasi Bharatiya Divas was taken in accordance with recommendations of the High Level Committee (HLC) on the Indian Diaspora set up by government of India under the chairmanship of L.M. Singhvi in 2002. The first annual Pravasi Bharatiya Divas 2003 attracted more than 2,000 persons of Indian origin from around the world, including the descendants of indentured laborers in the Caribbean as well as Silicon Valley professionals.

Pravasi Bharatiya Divas conferences have inaugurated a new cultural, historical, and political relationship between the Indian state and its diasporas and enabled us to understand how postcolonial states actively constitute diasporas as national subjects. The Divas is also held with a view to connect India to its vast Indian diaspora and bringing their knowledge, expertise and skills on a common platform. Besides dealing with all matters relating to Overseas Indians, Indian government gets engaged in several initiatives with them for the promotion of trade and investment, emigration, education, culture, health and science & technology.

Significance

PBD conventions are being held every year since 2003. These conventions provide a platform to the overseas Indian community to engage with the government and people of the land of their ancestors for mutually beneficial activities. These conventions are also very useful in networking among the overseas Indian community residing in various parts of the world and enable them to share their experiences in various fields. During the event, individuals of exceptional merit are honoured with the prestigious Pravasi Bharatiya Samman Award to appreciate their role in India's growth. The event also provides a forum for discussing key issues concerning the Indian Diaspora and Government of India showcases investment opportunities in India and its potential in various sectors.

Previous Pravasi Bharatiya Divas were held in: Kochi (2013), Jaipur (2012), New Delhi (2011, 2010, 2008, 2007, 2004 & 2003), Chennai (2009), Hyderabad (2006) and Mumbai (2005).

Previous Regional Pravasi Bharatiya Divas were held in: New York (2007), Singapore (2008), Hague (2009), Durban (2010), Toronto (2011), Mauritius 2012. The seventh Regional Pravasi Bharatiya Divas will be held in Sydney, Australia from November 10-12, 2013.

The Ministry of Overseas Indian Affairs of the Government of India has decided to hold the 2013 Regional Pravasi Bharatiya Divas Convention in Sydney over three days from November 10-12, 2013.

Shri Vayalar Ravi, Hon. Minister of Overseas Indian Affairs and the Hon. Barry O'Farrell, Premier of NSW, jointly made the announcement via a video link simultaneously in New Delhi and Sydney.

Speaking on the occasion, Shri Vayalar Ravi noted that the objective of the event is to reach out to those members of the community who have been unable to participate in the annual PBD in India, and to provide a platform for the Indian community in Australia and the Pacific to contribute to the relationship between countries of the region and India.

Shri Vayalar Ravi also remarked that the Pravasi Bharatiya Divas (PBD) has been celebrated in India on January 9th each year since 2003 to mark the contributions of the overseas Indian community in the development of India.

Noting the significance of the date of PBD, in his remarks Mr. O'Farrell said that Mahatma Gandhi was a "universal icon", and not just an Indian one. "Sydney is the perfect location for this conference as it is Australia's financial and cultural capital", he said.

Regional PBDs are organised by the Ministry of Overseas Indian Affairs with the collaboration of the host Government, the Indian Mission, Prominent Overseas Indians and Organisations catering to the needs of the Indian Diaspora.

Participation in the event is expected from all States and Territories of Australia and from neighbouring countries including Singapore, Malaysia, Indonesia, Manila, Hong Kong, Papua New Guinea, New Zealand, Fiji and the Pacific Islands.

This convention is not only for the Indian community, but for all persons who are interested in plugging into India's growing relationship with Australia and other Pacific countries. It is expected that more than a thousand individuals will participate in the conference.

The programme of the event will feature discussions on different aspects of India's relationship with Australia and countries of the region including resources, energy, infrastructure, agriculture, manufacturing, skills and education, languages, women in business and culture.

Speakers at the event will include Ministers and prominent dignitaries from Australia and India, prominent members of the Indian community, Australian and Indian business representatives and academicians and media persons.

The members of National Organising Committee for Regional PBD Sydney 2013 are:

1. His Excellency Biren Nanda, High Commissioner of India, High Commission of India in Canberra

2. Hon. Arun Kumar Goel, Consul General of India in Sydney, Consulate General of India Sydney

3. Hon. Lisa Singh, Senator, Federal Parliament

4. Mr. Neville Roach, AO, PMGAC, IDFOI-A

5. Mr. Dipen Rughani, National Chairman, Australia India Business Council

6. Mr. Nihal Gupta, Chairman, NSW Government Multicultural Business Advisory Council

7. Mr. Amitabh Mattoo, President, Australia-India Institute

8. Mr. Gambhir Watts OAM, President, Bharatiya Vidya Bhavan Australia, Sydney

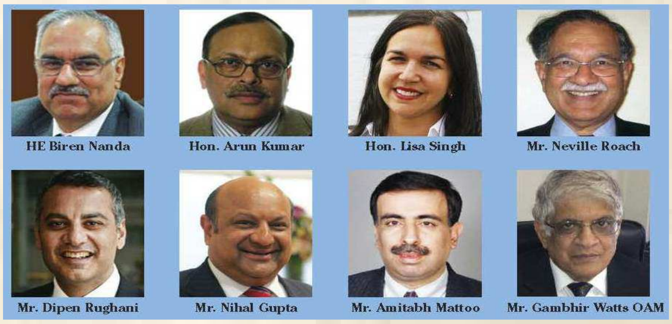

HE Biren Nanda | Hon. Arun Kumar | Hon. Lisa Singh | Mr. Neville Roach
Mr. Dipen Rughani | Mr. Nihal Gupta | Mr. Amitabh Mattoo | Mr. Gambhir Watts OAM

अन्तिम प्यार

कमरे में जो लड़के बैठे थे, योगेश बाबू को क्रोधित देखकर उसके सामने ही मुंह बन्द करके हंस रहे थे।

सहसा वह हंसी योगेश बाबू ने भी देख ली, क्रोधित स्वर में बोले - तुम लोग हंस रहे हो, क्यों?

एक लड़के ने चाटुकारिता से जल्दी-जल्दी कहा - नहीं महाशय! आपको क्रोध आये और हम लोग हंसे, यह भला कभी सम्भव हो सकता है?

ऊंह! मैं समझ गया, अब अधिक चातुर्य की आवश्यकता नहीं। क्या तुम लोग यह कहना चाहते हो कि अब तक तुम सब दांत निकालकर रो रहे थे, मैं ऐसा मूर्ख नहीं हूं? यह कहकर उन्होंने आंखें बन्द कर ली।

लड़कों ने किसी प्रकार हंसी रोककर कहा - चलिए यों ही सही, हम हंसते ही थे और रोते भी क्यों? पर हम नरेन्द्र के पागलपन को सोचकर हंसते थे। वह देखो मास्टर साहब के साथ नरेन्द्र भी आ रहा है।

मास्टर साहब के साथ-साथ नरेन्द्र भी कमरे में आ गया।

योगेश ने एक बार नरेन्द्र की ओर वक्र दृष्टि से देखकर मनमोहन बाबू से कहा - महाशय! नरेन्द्र मेरे विषय में क्या कहता है?

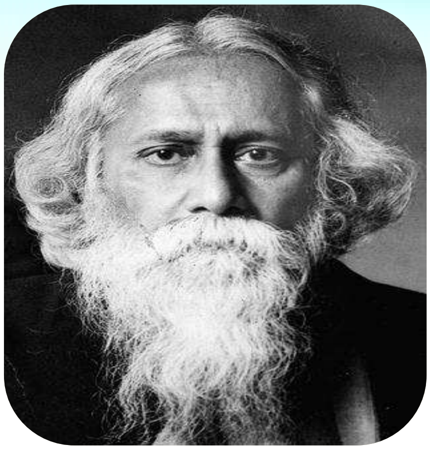

मनमोहन बाबू जानते थे कि उन दोनों की लगती है। दो पाषाण जब परस्पर टकराते हैं तो अग्नि उत्पन्न हो ही जाती है। अतएव वह बात को संभालते, मुस्कराते-से बोले- योगेश बाबू, नरेन्द्र क्या कहता है?

नरेन्द्र कहता है कि मैं रुपये के दृष्टिकोण से चित्र बनाता हूं। मेरा कोई आदर्श नहीं है?

मनमोहन बाबू ने पूछा - क्यों नरेन्द्र? *(जारी ...)*

साभार: http://www.hindisamay.com/

नोबेल पुरस्कार प्राप्त कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने साहित्य, शिक्षा, संगीत, कला, रंगमंच और शिक्षा के क्षेत्र में अपनी अनूठी प्रतिभा का परिचय दिया। अपने मानवतावादी दृष्टिकोण के कारण वह सही मायनों में विश्वकवि थे। टैगोर दुनिया के संभवत: एकमात्र ऐसे कवि हैं जिनकी रचनाओं को दो देशों ने अपना राष्ट्रगान बनाया। बचपन से कुशाग्र बुद्धि के रवींद्रनाथ ने देश और विदेशी साहित्य, दर्शन, संस्कृति आदि को अपने अंदर समाहित कर लिया था और वह मानवता को विशेष महत्व देते थे। इसकी झलक उनकी रचनाओं में भी स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होती है। साहित्य के क्षेत्र में उन्होंने अपूर्व योगदान दिया और उनकी रचना गीतांजलि के लिए उन्हें साहित्य के नोबल पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया था। गुरुदेव सही मायनों में विश्वकवि होने की पूरी योग्यता रखते हैं।

अमृत

मेरी उठती जवानी थी जब मेरा दिल दर्द के मजे से परिचित हुआ। कुछ दिनों तक शायरी का अभ्यास करता रहा और धीर-धीरे इस शौक ने तल्लीनता का रुप ले लिया। सांसारिक संबंधो से मुंह मोड़कर अपनी शायरी की दुनिया में आ बैठा और तीन ही साल की मश्क़ ने मेरी कल्पना के जौहर खोल दिये। कभी-कभी मेरी शायरी उस्तादों के मशहूर कलाम से टक्कर खा जाती थी। मेरे क़लम ने किसी उस्ताद के सामने सर नहीं झुकाया। मेरी कल्पना एक अपने-आप बढ़ने वाले पौधे की तरह छंद और पिंगल की क़ैदो से आजाद बढ़ती रही और ऐसे कलाम का ढंग निराला था। मैंने अपनी शायरी को फारस से बाहर निकाल कर योरोप तक पहुँचा दिया। यह मेरा अपना रंग था। इस मैदान में न मेरा कोई प्रतिद्वंद्वी था, न बराबरी करने वाला बावजूद इस शायरों जैसी तल्लीनता के मुझे मुशायरों की वाह-वाह और सुभानअल्लाह से नफ़रत थी। हां, काव्य-रसिकों से बिना अपना नाम बताये हुए अक्सर अपनी शायरी की अच्छाइयों और बुराइयों पर बहस किया करता। तो मुझे शायरी का दावा न था मगर धीरे-धीरे मेरी शोहरत होने लगी और जब मेरी मसनवी 'दुनियाए हुस्न' प्रकाशित हुई तो साहित्य की दुनिया में हल-चल-सी मच गयी। पुराने शायरों ने काव्य-मर्मज्ञों की प्रशंसा-कृपणता में पोथे के पोथे रंग दिये हैं मगर मेरा अनुभव इसके बिलकुल विपरीत था।

मैंने साहित्य की दुनिया पर कोई वशीकरण कर दिया है। इसी दौरान मैंने फुटकर शेर तो बहुत कहे मगर दावतों और अभिनंदनपत्रों की भीड़ ने मार्मिक भावों को उभरने न दिया।

मुझे कभी-कभी यह ख़याल सताया करता कि मेरे कद्रदानों की यह उदारता दूसरे कवियों की लेखनी की दरिद्रता का प्रमाण है। यह ख़याल हौसला तोड़ने वाला था। बहरहाल, जो कुछ हुआ, 'दुनियाए हुस्न' ने मुझे शायरी का बादशाह बना दिया। मेरा नाम हरेक ज़बान पर था। मेरी चर्चा हर एक अखबार में थी। शोहरत अपने साथ दौलत भी लायी। मुझे दिन-रात शेरो-शायरी के अलावा और कोई काम न था। अक्सर बैठे-बैठे रातें गुज़र जातीं और जब कोई चुभता हुआ शेर कलम से निकल जाता तो मैं खुशी के मारे उछल पड़ता। मैं अब तक शादी-ब्याह की कैंदों से आजाद्र था या यों कहिए कि मैं उसके उन मजों से अपरिचित था जिनमें रंज की तल्खी भी है और खुशी की नमकीनी भी। अक्सर पश्चिमी साहित्यकारों की तरह मेरा भी ख्याल था कि साहित्य के उन्माद और सौन्दर्य के उन्माद में पुराना बैर है। मुझे अपनी जबान से कहते हुए शर्मिन्दा होना पड़ता है कि मुझे अपनी तबियत पर भरोसा न था। जब कभी मेरी आँखों में कोई मोहिनी सूरत घूम जाती तो मेरे दिल-दिमाग पर एक पागलपन-सा छा जाता। हफ्तों तक अपने को भूला हुआ-सा रहता। लिखने की तरफ तबियत किसी तरह न झुकती। ऐसे कमजोर दिल में सिर्फ एक इश्क की जगह थी।

इसी डर से मैं अपनी रंगीन ततिबयत के खिलाफ आचरण शुद्ध रखने पर मजबूर था। कमल की एक पंखुड़ी, श्यामा के एक गीत, लहलहाते हुए एक मैदान में मेरे लिए जादू का-सा आकर्षण था मगर किसी औरत के दिलफ़रेब हुस्न को मैं चित्रकार या मूर्तिकार की बैलौस आँखों से नहीं देख सकता था। सुंदर स्त्री मेरे लिए एक रंगीन, क़ातिल नागिन थी जिसे देखकर आँखें खुश होती हैं मगर दिल डर से सिमट जाता है। खैर, 'दुनियाए हुस्न' को प्रकाशित हुए दो साल गुजर चुके थे। मेरी ख्याति बरसात की उमड़ी हुई नदी की तरह बढ़ती चली जाती थी। ऐसा मालूम होता था जैसे मैंने साहित्य की दुनिया पर कोई वशीकरण कर दिया है। इसी दौरान मैंने फुटकर शेर तो बहुत कहे मगर दावतों और अभिनंदनपत्रों की भीड़ ने मार्मिक भावों को उभरने न दिया। प्रदर्शन और ख्याति एक राजनीतिज्ञ के लिए कोड़े का काम दे सकते हैं, मगर शायर की तबियत अकेले शांति से एक कोने के बैठकर ही अपना जौहर दिखालाती है। चुनांचे मैं इन रोज-ब-रोज बढ़ती हुई बेहूदा बातों से गला छुड़ा कर भागा और पहाड़ के एक कोने में जा छिपा। 'नैरंग' ने वहीं जन्म लिया।

नैरंग' के शुरु करते हुए ही मुझे एक आश्चर्यजनक और दिल तोड़ने वाला अनुभव हुआ। ईश्वर जाने क्यों मेरी अक्ल और मेरे चिंतन पर पर्दा पड़ गया। घंटों तबियत पर जोर डालता मगर एक शेर भी ऐसा न निकलता कि दिल फड़के उठे। सूझते भी तो दरिद्र, पिटे हुए विषय, जिनसे मेरी आत्मा भागती थी। मैं अक्सर झुझलाकर उठ बैठता, कागज फाड़ डालता और बड़ी बेदिली की हालत में सोचने लगता कि क्या मेरी काव्यशक्ति का अंत हो गया, क्या मैंने वह खजाना जो प्रकृति ने मुझे सारी उम्र के लिए दिया था, इतनी जल्दी मिटा दिया। कहां वह हालत थी कि विषयों की बहुतायत और नाजुक खयालों की रवानी क़लम को दम नहीं लेने देती थी। कल्पना का पंछी उड़ता तो आसमान का तारा बन जाता था और कहां अब यह पस्ती! यह करुण दरिद्रता! मगर इसका कारण क्या है? यह किस क़सूर की सज़ा है। कारण और कार्य का दूसरा नाम दुनिया है।

मैं अक्सर झुझलाकर उठ बैठता, कागज फाड़ डालता और बड़ी बेदिली की हालत में सोचने लगता कि क्या मेरी काव्यशक्ति का अंत हो गया, क्या मैंने वह खजाना जो प्रकृति ने मुझे सारी उम्र के लिए दिया था, इतनी जल्दी मिटा दिया।

जब तक हमको क्यों का जवाब न मिले, दिल को किसी तरह सब्र नहीं होता, यहां तक कि मौत को भी इस क्यों का जवाब देना पड़ता है। आखिर मैंने एक डाक्टर से सलाह ली। उसने आम डाक्टरों की तरह आब-हवा बदलने की सलाह दी। मेरी अक्ल में भी यह बात आयी कि मुमकिन है नैनीताल की ठंडी आब-हवा से शायरी की आग ठंडी पड़ गई हो। छ: महीने तक लगातार घूमता-फिरता रहा। अनेक आकर्षक दृश्य देखे, मगर उनसे आत्मा पर वह शायराना कैफियत न छाती थी कि प्याला छलक पड़े और खामोश कल्पना खुद ब खुद चहकने लगे। मुझे अपना खोया हुआ लाल न मिला। अब मैं जिंदगी से तंग था। जिंदगी अब मुझे सूखे रेगिस्तान जैसी मालूम होती जहां कोई जान नहीं, ताज़गी नहीं, दिलचस्पी नहीं। हरदम दिल पर एक मायूसी-सी छायी रहती और दिल खोया-खोया रहता।

दिल में यह सवाल पैदा होता कि क्या वह चार दिन की चांदनी खत्म हो गयी और अंधेरा पाख आ गया? आदमी की संगत से बेजार, हमजिंस की सूरत से नफरत, मैं एक गुमनाम कोने में पड़ा हुआ जिंदगी के दिन पूरे कर रहा था। पेड़ों की चोटियों पर बैठने वाली, मीठे राग गाने वाली चिड़िया क्या पिंजरे में ज़िंदा रह सकती हैं? मुमकिन है कि वह दाना खाये, पानी पिये मगर उसकी इस जिंदगी और मौत में कोई फर्क नहीं है।

आखिर जब मुझे अपनी शायरी के लौटने की कोई उम्मीद नहीं रही, तो मेरे दिल में यह इरादा पक्का हो गया कि अब मेरे लिए शायरी की दुनिया से मर जाना ही बेहतर होगा। मुर्दा तो हूँ ही, इस हालत में अपने को जिंदा समझना बेवकूफी है। आखिर मैने एक रोज कुछ दैनिक पत्रों का अपने मरने की खबर दे दी। उसके छपते ही मुल्क में कोहराम मच गया, एक तहलका पड़ गया। उस वक्त मुझे अपनी लोकप्रियता का कुछ अंदाजा हुआ। यह आम पुकार थी, कि शायरी की दुनिया की किस्ती मंझधार में डूब गयी। शायरी की महफिल उखड़ गयी। पत्र-पत्रिकाओं में मेरे जीवन-चरित्र प्रकाशित हुए जिनको पढ़ कर मुझे उनके एडीटरों की आविष्कार-बुद्धि का क़ायल होना पड़ा। न तो मैं किसी रईस का बेटा था और न मैंने रईसी की मसनद छोड़कर फकीरी अख्तियार की थी। उनकी कल्पना वास्तविकता पर छा गयी थी। मेरे मित्रों में एक साहब ने, जिन्हे मुझसे आत्मीयता का दावा था, मुझे पीने-पिलाने का प्रेमी बना दिया था।

वह जब कभी मुझसे मिलते, उन्हें मेरी आखें नशे से लाल नजर आतीं। अगरचे इसी लेख में आगे चलकर उन्होनें मेरी इस बुरी आदत की बहुत हृदयता से सफाई दी थी क्योंकि रुखा-सूखा आदमी ऐसी मस्ती के शेर नहीं कह सकता था। ताहम हैरत है कि उन्हें यह सरीहन गलत बात कहने की हिम्मत कैसे हुई।

खैर, इन गलत-बयानियों की तो मुझे परवाह न थी। अलबत्ता यह बड़ी फिक्र थी, फिक्र नहीं एक प्रबल जिज्ञासा थी, कि मेरी शायरी पर लोगों की जबान से क्या फतवा निकलता है। हमारी जिंदगी के कारनामे की सच्ची दाद मरने के बाद ही मिलती है क्योंकि उस वक्त वह खुशामद और

बुराइयों से पाक-साफ होती हैं। मरने वाले की खुशी या रंज की कौन परवाह करता है। इसीलिए मेरी कविता पर जितनी आलोचनाएँ निकली हैं उसको मैंने बहुत ही ठंडे दिल से पढ़ना शुरु किया। मगर कविता को समझने वाली दृष्टि की व्यापकता और उसके मर्म को समझने वाली रुचि का चारों तरफ अकाल-सा मालूम होता था। अधिकांश जौहरियों ने एक-एक शेर को लेकर उनसे बहस की थी, और इसमें शक नहीं कि वे पाठक की हैसियत से उस शेर के पहलुओं को खूब समझते थे। मगर आलोचक का कहीं पता न था। नजर की गहराई गायब थी। समग्र कविता पर निगाह डालने वाला कवि, गहरे भावों तक पहुँचने वाला कोई आलोचक दिखाई न दिया।

एक रोज़ मैं प्रेतों की दुनिया से निकलकर घूमता हुआ अजमेर की पब्लिक लाइब्रेरी में जा पहुँचा। दोपहर का वक्त था। मैंने मेज पर झुककर देखा कि कोई नयी रचना हाथ आ जाये तो दिल बहलाऊँ। यकायक मेरी निगाह एक सुंदर पत्र की तरफ गयी जिसका नाम था 'कलामें अख्तर'। जैसे भोला बच्चा खिलौने कि तरफ लपकता है उसी तरह झपटकर मैंने उस किताब को उठा लिया। उसकी लेखिका मिस आयशा आरिफ़ थीं। दिलचस्पी और भी ज्यादा हुई। मैं इत्मीनान से बैठकर उस किताब को पढ़ने लगा। एक ही पन्ना पढ़ने के बाद दिलचस्पी ने बेताबी की सूरत अख्तियार की। फिर तो मैं बेसुधी की दुनिया में पहुँच गया। मेरे सामने गोया सूक्ष्म अर्थो की एक नदी लहरें मार रही थी।

मेरे क़दमो की पहचानी हुई आहटे पाते ही उसका चेहरा कैसे कमल की तरह खिल जाता था और आंखों से कामना की किरणें निकलने लगती थीं।

कल्पना की उठान, रुचि की स्वच्छता, भाषा की नर्मी। काव्य-दृष्टि ऐसी थी कि हृदय धन्य-धन्य हो उठता था। मैं एक पैराग्राफ पढ़ता, फिर विचार की ताज़गी से प्रभावित होकर एक लंबी साँस लेता और तब सोचने लगता, इस किताब को सरसरी तौर पर पढ़ना असम्भव था। यह औरत थी या सुरुचि की देवी। उसके इशारों से मेरा कलाम बहुत कम बचा था मगर जहां उसने मुझे दाद दी थी वहां सच्चाई के मोती बरसा दिये थे। उसके एतराजों में हमदर्दी और प्रशंसा में भक्ति था। शायर के कलाम को दोषों की दृष्टियों से नहीं देखना चाहिये। उसने क्या नहीं किया, यह ठीक कसौटी नहीं। बस यही जी चाहता था कि लेखिका के हाथ और कलम चूम लूँ। 'सफ़ीर' भोपाल के दफ्तर से एक पत्रिका प्रकाशित हुई थी।

मेरा पक्का इरादा हो गया, तीसरे दिन शाम के वक्त मैं मिस आयशा के खूबसूरत बंगले के सामने हरी-हरी घास पर टहल रहा था। मैं नौकरानी के साथ एक कमरे में दाखिल हुआ। उसकी सजावट बहुत सादी थी। पहली चीज़ पर निगाहें पड़ीं वह मेरी तस्वीर थी जो दीवार पर लटक रही थी। सामने एक आइना रखा हुआ था। मैंने खुदा जाने क्यों उसमें अपनी सूरत देखी। मेरा चेहरा पीला और कुम्हलाया हुआ था, बाल उलझे हुए, कपड़ों पर गर्द की एक मोटी तह जमी हुई, परेशानी की जिंदा तस्वीर थी।

उस वक्त मुझे अपनी बुरी शक्ल पर सख्त शर्मिंदगी हुई। मैं सुंदर न सही मगर इस वक्त तो सचमुच चेहरे पर फटकार बरस रही थी। अपने लिबास के ठीक होने का यकीन हमें खुशी देता है। अपने फुहड़पन का जिस्म पर इतना असर नहीं होता जितना दिल पर। हम बुजदिल और बेहौसला हो जाते हैं।

मुझे मुश्किल से पांच मिनट गुजरे होंगे कि मिस आयशा तशरीफ़ लायीं। सांवला रंग था, चेहरा एक गंभीर घुलावट से चमक रहा था। बड़ी-बड़ी नरगिसी आंखों से सदाचार की, संस्कृति की रोशनी झलकती थी। क़द मझोले से कुछ कम। अंग-प्रत्यंग छरहरे, सुथरे, ऐसे हल्की-फुल्की कि जैसे प्रकृति ने उसे इस भौतिक संसार के लिए नहीं, किसी काल्पनिक संसार के लिए सिरजा है। कोई चित्रकार कला की उससे अच्छी तस्वीर नही खींच सकता था।

मिस आयशा ने मेरी तरफ दबी निगाहों से देखा मगर देखते-देखते उसकी गर्दन झुक गयी और उसके गालों पर लाज की एक हल्की-परछाईं नाचती हुई मालूम हुई। जमीन से उठकर उसकी आँखें मेरी तस्वीर की तरफ गयीं और फिर सामने पर्दे की तरफ जा पहुँचीं। शायद उसकी आड़ में छिपना चाहती थीं। मिस आयशा ने मेरी तरफ दबी निगाहों से देखकर

पूछा—आप स्वर्गीय अख्तर के दोस्तों में से हैं? मैंने सिर नीचा किये हुए जवाब दिया—मैं ही बदनसीब अख्तर हूँ।

आयशा एक बेखुदी के आलम में कुर्सी पर से खड़ी हुई और मेरी तरफ हैरत से देखकर बोलीं—'दुनियाए हुस्न' के लिखने वाले?

अंधविश्वास के सिवा और किसने इस दुनिया से चले जानेवाले को देखा है? आयशा ने मेरी तरफ कई बार शक से भरी निगाहों से देखा। उनमें अब शर्म और हया की जगह के बजाय हैरत समायी हुई थी। मेरे कब्र से निकलकर भागने का तो उसे यकीन आ ही नहीं सकता था, शायद वह मुझे दीवाना समझ रही थी। उसने दिल में फैसला किया कि इस आदमी मरहूम शायर का कोई क़रीबी अजीज है। शकल जिस तरह मिल रही थी वह दोनों के एक खानदान के होने का सबूत थी। मुमकिन है कि भाई हो। वह अचानक सदमे से पागल हो गया है। शायद उसने मेरी किताब देखी होगी ओर हाल पूछने के लिए चला आया। अचानक उसे ख़याल गुजरा कि किसी ने अखबारों को मेरे मरने की झूठी खबर दे दी हो और मुझे उस खबर को काटने का मौका न मिला हो। इस ख़याल से उसकी उलझन दूर हुई, बोली—अखबारों में आपके बारे में एक निहायत मनहूस खबर छप गयी थी? मैंने जवाब दिया—वह खबर सही थी।

अगर पहले आयशा को मेरे दिवानेपन में कुछ था तो वह दूर हो गया। आखिर मैने थोड़े लफ़्जो में अपनी दास्तान सुनायी और जब उसको यकीन हो गया कि 'दुनियाए हुस्न' का लिखनेवाला अख्तर अपने इन्सानी चोले में है तो उसके चेहरे पर खुशी की एक हल्की सुर्खी दिखायी दी और यह हल्का रंग बहुत जल्द खुददारी और रुप-गर्व के शोख रंग से मिलकर कुछ का कुछ हो गया। ग़ालिबन वह शर्मिंदा थी कि क्यों उसने अपनी क़द्रदानी को हद से बाहर जाने दिया। कुछ देर की शर्मीली खामोशी के बाद उसने कहा—मुझे अफसोस है कि आपको ऐसी मनहूस खबर निकालने की जरुरत हुई। मैंने जोश में भरकर जवाब दिया—आपके क़लम की जबान से दाद पाने की कोई सूरत न थी।

इस तनक़ीद के लिए मैं ऐसी-ऐसी कई मौते मर सकता था। मेरे इस बेधड़क अंदाज ने आयशा की जबान को भी शिष्टाचार और संकोच की क़ैद से आज़ाद किया, मुस्कराकर बोली—मुझे बनावट पसंद नहीं है। डाक्टरों ने कुछ बतलाया नहीं? उसकी इस मुस्कराहट ने मुझे दिल्लगी करने पर आमादा किया, बोला—अब मसीहा के सिवा इस मर्ज का इलाज और किसी के हाथ नहीं हो सकता। आयशा इशारा समझ गई, हँसकर बोली—मसीहा चौथे आसमान पर रहते हैं।

मेरी हिम्मत ने अब और कदम बढ़ाये—रुहों की दुनिया से चौथा आसमान बहुत दूर नहीं है।

> वह रात कभी नहीं भूलेगी जब आयशा दुल्हन बनी हुई मेरे घर में आयी।

आयशा के खिले हुए चेहरे से संजीदगी और अजनबियत का हल्का रंग उड़ गया। ताहम, मेरे इन बेधड़क इशारों को हद से बढ़ते देखकर उसे मेरी जबान पर रोक लगाने के लिए किसी क़दर खुददारी बरतनी पड़ी। जब मैं कोई घंटे-भर के बाद उस कमरे से निकला तो बजाय इसके कि वह मेरी तरफ अपनी अंग्रेजी तहज़ीब के मुताबिक हाथ बढ़ाये उसने चोरी-चोरी मेरी तरफ देखा। फैला हुआ पानी जब सिमटकर किसी जगह से निकलता है तो उसका बहाव तेज़ और ताक़त कई गुना ज्यादा हो जाती है आयशा की उन निगाहों में अस्मत की तासीर थी। उनमें दिल मुस्कराता था और जज्बा नाजता था। आह, उनमें मेरे लिए दावत का एक पुरजोर पैग़ाम भरा हुआ था। जब मैं मुस्लिम होटल में पहुँचकर इन वाक़यात पर गौर करने लगा तो मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि गो मैं ऊपर से देखने पर यहां अब तक अपरिचित था लेकिन भीतरी तौर पर शायद मैं उसके दिल के कोने तक पहुँच चुका था।

जब मैं खाना खाकर पलंग पर लेटा तो बावजूद दो दिन रात-रात-भर जागने के नींद आंखों से कोसों दूर थी। जज्बात की कशमकश में नींद कहाँ। आयशा की सूरत, उसकी खातिरदारियाँ और उसकी वह छिपी-छिपी निगाह दिल में

एकसासों का तूफान-सा बरपा रही थी उस आखिरी निगाह ने दिल में तमन्नाओं की रुम-धूम मचा दी। वह आरजुएं जो, बहुत अरसा हुआ, मर मिटी थीं फिर जाग उठीं और आरजुओं के साथ कल्पना ने भी मुंदी हुई आंखे खोल दीं। दिल में जज्ब़ात और कैफ़ियात का एक बेचैन करनेवाला जोश महसूस हुआ। यही आरजुएं, यही बेचैनिया और यही कोशिशें कल्पना के दीपक के लिए तेल हैं। जज्बात की हरारत ने कल्पना को गरमाया। मैं क़लम लेकर बैठ गया और एक ऐसी नज़्म लिखी जिसे मैं अपनी सबसे शानदार दौलत समझता हूँ।

मैं एक होटल मे रह रहा था, मगर किसी-न-किसी हीले से दिन में कम-से-कम एक बार जरुर उसके दर्शन का आनंद उठाता । गो आयशा ने कभी मेरे यहाँ तक आने की तकलीफ नहीं की तो भी मुझे यह यकीन करने के लिए शहादतों की जरुरत न थी कि वहाँ किस क़दर सरगर्मी से मेरा इंतजार किया जाता था, मेरे क़दमो की पहचानी हुई आहटे पाते ही उसका चेहरा कैसे कमल की तरह खिल जाता था और आंखों से कामना की किरणें निकलने लगती थीं।

> यह उस दीपक का वरदान है, जो अब मेरे दिल में जल गया था और रोशनी दे रहा था।

यहाँ छ: महीने गुजर गये। इस जमाने को मेरी जिंदगी की बहार समझना चाहिये। मुझे वह दिन भी याद है जब मैं आरजुओं और हसरतों के ग़म से आजाद था। मगर दरिया की शांतिपूर्ण रवानी में थिरकती हुई लहरों की बहार कहाँ, अब अगर मुहब्बत का दर्द था तो उसका प्राणदायी मज़ा भी था।

अगर आरजुओं की घुलावट थी तो उनकी उमंग भी थी। आह, मेरी यह प्यासी आंखें उस रुप के स्रोत से किसी तरह तृप्त न होंती। जब मैं अपनी नशें में डूबी हुई आंखो से उसे देखता तो मुझे एक आत्मिक तरावट-सी महसूस होती। मैं उसके दीदार के नशे से बेसुध-सा हो जाता और मेरी रचना-शक्ति का तो कुछ हद-हिसाब न था। ऐसा मालूम होता था कि जैसे दिल में मीठे भावों का सोता खुल गया था। अपनी कवित्व शक्ति पर खुद अचम्भा होता था। क़लम हाथ में ली और रचना का सोता-सा बह निकला। 'नैरंग' में ऊँची कल्पनाएँ न हो, बड़ी गूढ़ बातें न हों, मगर उसका एक-एक शेर प्रवाह और रस, गर्मी और घुलावट की दाद दे रहा है।

यह उस दीपक का वरदान है, जो अब मेरे दिल में जल गया था और रोशनी दे रहा था। यह उस फूल की महक थी जो मेरे दिल में खिला हुआ था। मुहब्बत रुह की खुराक है। यह अमृत की बूंद है जो मरे हुए भावों को जिंदा कर देती है। मुहब्बत आत्मिक वरदान है। यह जिंदगी की सबसे पाक, सबसे ऊँची, मुबारक बरक़त है। यही अक्सीर थी जिसकी अनजाने ही मुझे तलाश थी। वह रात कभी नहीं भूलेगी जब आयशा दुल्हन बनी हुई मेरे घर में आयी। 'नैरंग' उसकी मुबारक जिंदगी की यादगार है। 'दुनियाए हुस्न' एक कली थी, 'नैरंग' खिला हुआ फूल है और उस कली को खिलाने वाली कौन-सी चीज है? वही जिसकी मुझे अनजाने ही तलाश थी और जिसे मैं अब पा गया था।

....उर्दू 'प्रेम पचीसी' से

ड्राइंग रूम में मरता हुआ गुलाब

गुलाब
तू बदरंग हो गया है
बदरूप हो गया है
झुक गया है
तेरा मुंह चुचुक गया है
तू चुक गया है ।

ऐसा तुझे देख कर
मेरा मन डरता है
फूल इतना डरावाना हो कर मरता है!
खुशनुमा गुलदस्ते में
सजे हुए कमरे में
तू जब

ऋतु-राज राजदूत बन आया था
कितना मन भाया था-
रंग-रूप, रस-गंध टटका
क्षण भर को
पंखुरी की परतो में
जैसे हो अमरत्व अटका!
कृत्रिमता देती है कितना बडा झटका!

तू आसमान के नीचे सोता
तो ओस से मुंह धोता
हवा के झोंके से झरता
पंखुरी पंखुरी बिखरता
धरती पर संवरता
प्रकृति में भी है सुंदरता ।

हरिवंश राय बच्चन (27 नवंबर, 1907 - 18 जनवरी, 2003) हिन्दी भाषा के प्रसिद्ध कवि और लेखक थे। उनकी कविताओं की लोकप्रियता का प्रधान कारण उसकी सहजता और संवेदनशील सरलता है । 'मधुबाला', 'मधुशाला' और 'मधुकलश' उनके प्रमुख संग्रह हैं । हरिवंश राय बच्चन को 'साहित्य अकादमी पुरस्कार', सरस्वती सम्मान एवं भारत सरकार द्वारा सन् 1976 में साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। *साभार:* कविता कोश, http://www.kavitakosh.org, चित्र: http://gadyakosh.org

संत कबीरदास दोहावली

हीरा वहाँ न खोलिये, जहाँ कुंजड़ों की हाट।
बांधो चुप की पोटरी, लागहु अपनी बाट॥

कुटिल वचन सबसे बुरा, जारि कर तन हार।
साधु वचन जल रूप, बरसे अमृत धार॥

जग में बैरी कोई नहीं, जो मन शीतल होय।
यह आपा तो ड़ाल दे, दया करे सब कोय॥

मैं रोऊँ जब जगत को, मोको रोवे न होय।
मोको रोबे सोचना, जो शब्द बोय की होय॥

सोवा साधु जगाइए, करे नाम का जाप।
यह तीनों सोते भले, साकित सिंह और साँप॥

अवगुन कहूँ शराब का, आपा अहमक साथ।
मानुष से पशुआ करे दाय, गाँठ से खात॥

बाजीगर का बांदरा, ऐसा जीव मन के साथ।
नाना नाच दिखाय कर, राखे अपने साथ॥

अटकी भाल शरीर में तीर रहा है टूट।
चुम्बक बिना निकले नहीं कोटि पटन को फ़ूट॥

कबीरा जपना काठ की, क्या दिख्लावे मोय।
ह्रदय नाम न जपेगा, यह जपनी क्या होय॥

कबीर (1398-1518) कबीरदास, कबीर साहब एवं संत कबीर जैसे रूपों में प्रसिद्ध मध्यकालीन भारत के स्वाधीनचेता महापुरुष थे। इनका परिचय, प्रायः इनके जीवनकाल से ही, इन्हें सफल साधक, भक्त कवि, मतप्रवर्तक अथवा समाज सुधारक मानकर दिया जाता रहा है तथा इनके नाम पर कबीरपंथ नामक संप्रदाय भी प्रचलित है। संत कबीर दास हिंदी साहित्य के भक्ति काल के इकलौते ऐसे कवि हैं, जो आजीवन समाज और लोगों के बीच व्याप्त आडंबरों पर कुठाराघात करते रहे। कबीरदास ने हिन्दू-मुसलमान का भेद मिटा कर हिन्दू-भक्तों तथा मुसलमान फ़क़ीरों का सत्संग किया। तीन भागों; रमैनी, सबद और साखी में विस्तृत कबीर की वाणी का संग्रह 'बीजक' के नाम से प्रसिद्ध है।

साभार: *www.hindisahityadarpan.in, http://www.kavitakosh.org,* चित्र : *www.hindu-blog.com*

उत्तर

इस एक बूँद आँसू में,
चाहे साम्राज्य बहा दो,
वरदानों की वर्षा से,
यह सूनापन बिखरा दो;

इच्छाओं की कम्पन से,
सोता एकान्त जगा दो,
आशा की मुस्काहट पर,
मेरा नैराश्य लुटा दो ।

चाहे जर्जर तारों में,
अपना मानस उलझा दो,
इन पलकों के प्यालो में,
सुख का आसव छलका दो;
मेरे बिखरे प्राणों में,
सारी करुणा ढुलका दो,
मेरी छोटी सीमा में,
अपना अस्तित्व मिटा दो!

पर शेष नहीं होगी यह,
मेरे प्राणों की क्रीड़ा,
तुमको पीड़ा में ढूँढा,
तुम में ढूँढूँगी पीड़ा!

महादेवी वर्मा विरहपूर्ण गीतों की गायिका, आधुनिक युग की मीरा कही जाती हैं। "पद्मश्री" एवं "भारतीय ज्ञानपीठ" की उपाधि से सम्मानित महादेवी वर्मा वेदनाभाव की कवियित्री हैं। इनके काव्य का आधार वास्तव में प्रेमात्मक रहस्यवाद ही है। महादेवी वर्मा ने अपने अज्ञात प्रियतम को स्वरूपितकर, उससे अपना सम्बन्ध जोड़ा और अपने रहस्यवाद की अभिव्यंजना को चित्रात्मक भाषा में व्यक्त किया। उनके काव्य में शुद्ध छायावादी प्रकृति-दर्शन मिलता है। नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, दीपशिखा और यामा इनकी प्रसिद्ध काव्य कृतियाँ हैं। साभार: www. http://hi.bharatdiscovery.org चित्र: http://kv1maduraiIibrary.wordpress.com

मीरां बाई पदावली

शबरी प्रसंग

अजब सलुनी प्यारी मृगया नैनों। तें मोहन वश कीधो रे।
गोकुळ मां सौ बात करेरे बाला कां न कुबजे वश लीधो रे।।

मनको सो करी ते लाल अंबाडी अंकुशे वश कीधो रे।
लवींग सोपारी ने पानना बीदला राधांसु रारुयो कीनो रे।।

मीरां कहे प्रभु गिरिधर नागर चरणकमल चित्त दीनो रे।
अपनी गरज हो मिटी सावरे हम देखी तुमरी प्रीत।।

आपन जाय दुवारका छाय ऐसे बेहद भये हो नचिंत॥ ठोर० ।
ठार सलेव करित हो कुलभवर कीसि रीत।।

बीन दरसन कलना परत हे आपनी कीसि प्रीत।
मीरां के प्रभु गिरिधर नागर प्रभुचरन न परचित।।

साभार: www.hindisamay.com/

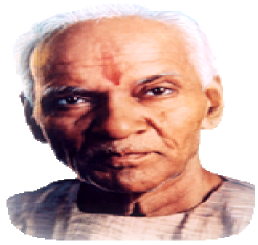

अभ्यास से उन्नति

अभ्यास से उन्नति जीवन का अखंड नियम है, क्योंकि इससे आत्मा की प्राणशक्ति को अधिक क्रिया करनी पड़ती है और वह नित्य व्यवहार में आने वाले चाकू की तरह मुर्छा आदि से मुक्त रहकर तेज ही होती है। शारीरिक और मानसिक विकास के शास्त्रीय सिद्धांतों पर विचार करने से यह सिद्ध होता है कि मानसिक विकास करना, अपनी बुद्धि को बढ़ाना, मनुष्य के अपने हाथ में है और वह प्रयत्नपूर्वक बुद्धिमान् बन सकने में सर्वथा स्वतंत्र है।

-पं. श्रीराम शर्मा आचार्य
बुद्धि बढाने की वैज्ञानिक विधि - पृ. 33

साभार: http://www.rishichintan.org/

ग़ज़ल

जाने किस मौज में आ जाते हैं हम शाम के बाद
धुँधले धुँधले से नजर आते हैं गम शाम के बाद

हर कोई अपने ठिकानें पे भला लगता हैं
हम तो खुद को भी नहीं कहतें हैं हम शाम के बाद

यह क्या आलम[1] है कि मगरब[2] की अजाँ सुनते ही
याद आ जाते हैं कुछ कारे अहम्[3] शाम के बाद

कोई बतलाये कि उसको सम्भालूँ कैसे
लड़खड़ा जाते हैं तौबा के कदम शाम के बाद

जब तेरी याद की शिद्दत[4] कभी बढ़ जाती है
तब उठा लेते हैं हम लौहो कलम[5] शाम के बाद

सर उठाना भी चाहूँ तो उठाऊ कैसे
सर पे रख देता है वो दस्ते करम[6] शाम के बाद

जाने किस आलमे मस्ती[7] में उडे फिरते हैं
हम नहीं रखते हैं धरती पे क़दम शाम के बाद

हम को हम ही से कोई छीन के ले जाता है
अपने हमराह[8] नहीं होते हैं हम शाम के बाद

1. हाल 2. शाम ढले की अजान 3. जरुरी काम 4. दबाव
5. तख्ती और कलम 6. कृपा का हाथ 7. नशें में 8. साथ

सिडनी वासी विख्यात उर्दू कवि ओम कृष्ण राहत ने केवल 13 साल की उम्र में उर्दू कविता का पहला संकलन प्रकाशित किया गया था। वह उर्दू, हिन्दी और पंजाबी में कविता, लघु कहानी और नाटक लिखते हैं। राजेंद्र सिंह बेदी, ख्वाजा अहमद अब्बास पुरस्कार और ऑस्ट्रेलिया की उर्दू सोसायटी निशान-ए-उर्दू के अलावा उन्हें उत्तर प्रदेश, हरियाणा और पंजाब और पश्चिम बंगाल की उर्दू अकादमियों द्वारा भी सम्मानित किया जा चुका है। उपरोक्त कृति, *ताजमहल* , कवि ओम कृष्ण राहत द्वारा सन 2007 में पर्काशित काव्य संग्रह, *दो कदम आगे*, में से संकलित की गयी है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब से

॥ जपु ॥

अखरी लिखणु बोलणु बाणि ॥
अखरा सिरि संजोगु वखाणि ॥

जिनि एहि लिखे तिसु सिरि नाहि ॥
जिव फुरमाए तिव तिव पाहि ॥

जेता कीता तेता नाउ ॥
विणु नावै नाही को थाउ ॥

कुदरति कवण कहा वीचारु ॥
वारिआ न जावा एक वार ॥

जो तुधु भावै साई भली कार ॥
तू सदा सलामति निरंकार ॥

भरीऐ हथु पैरु तनु देह ॥
पाणी धोतै उतरसु खेह ॥

मूत पलीती कपड़ु होइ ॥
दे साबूणु लईऐ ओहु धोइ ॥

भरीऐ मति पापा कै संगि ॥
ओहु धोपै नावै कै रंगि ॥

पुंनी पापी आखणु नाहि ॥
करि करि करणा लिखि लै जाहु ॥

आपे बीजि आपे ही खाहु ॥
नानक हुकमी आवहु जाहु ॥

तीरथु तपु दइआ दतु दानु ॥
जे को पावै तिल का मानु ॥

सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ ॥
अंतरगति तीरथि मलि नाउ ॥

सभि गुण तेरे मै नाही कोइ ॥
विणु गुण कीते भगति न होइ ॥

सुअसति आथि बाणी बरमाउ ॥
सति सुहाणु सदा मनि चाउ ॥

All rights reserved

पुलिस-महिमा

पड़ा - पड़ा क्या कर रहा, रे मूरख नादान
दर्पण रख कर सामने, निज स्वरूप पहचान
निज स्वरूप पहचान, नुमाइश मेले वाले
झुक - झुक करें सलाम, खोमचे - ठेले वाले
कहँ 'काका' कवि, सब्ज़ी - मेवा और इमरती
चरना चाहे मुफ़्त, पुलिस में हो जा भरती

कोतवाल बन जाये तो, हो जाये कल्यान
मानव की तो क्या चले, डर जाये भगवान
डर जाये भगवान, बनाओ मूँछे ऐसीं
इँठी हुईं, जनरल अयूब रखते हैं जैसीं
कहँ 'काका', जिस समय करोगे धारण वर्दी
ख़ुद आ जाये ऐंठ - अकड़ - सख़्ती - बेदर्दी

शान - मान - व्यक्तित्व का करना चाहो विकास
गाली देने का करो, नित नियमित अभ्यास
नित नियमित अभ्यास, कंठ को कड़क बनाओ
बेगुनाह को चोर, चोर को शाह बताओ
'काका', सीखो रंग - ढंग पीने - खाने के
'रिश्वत लेना पाप' लिखा बाहर थाने के।

साभार: http://www.hindisamay.com/

हाथरस में जन्मे काका हाथरसी (वास्तविक नाम: प्रभुलाल गर्ग) हिंदी हास्य कवि थे। काका हाथरसी हिन्दी हास्य व्यंग्य कविताओं के पर्याय माने जाते हैं। वे अपनी हास्य कविताओं को फुलझडियाँ कहा करते थे। भारतीय सरकार द्वारा पद्म श्री से सम्मानित काका हाथरसी का कविता संग्रह इस प्रकार है:- काका के कारतूस, काकादूत, हंसगुल्ले, काका के कहकहे, काका के प्रहसन, काका की फुलझड़ियाँ, लूटनीति मंथन करि, खिलखिलाहट, काका तरंग, जय बोलो बेईमान की, यार सप्तक, काका के व्यंग्य बाण। काका हाथरसी पुरस्कार, इनके नाम से चलाये गये काका हाथरसी पुरस्कार ट्रस्ट, हाथरस द्वारा प्रतिवर्ष एक सर्वश्रेष्ठ हास्य कवि को प्रदान किया जाता है। *साभार:* http://bharatdiscovery.org/

15 अगस्त

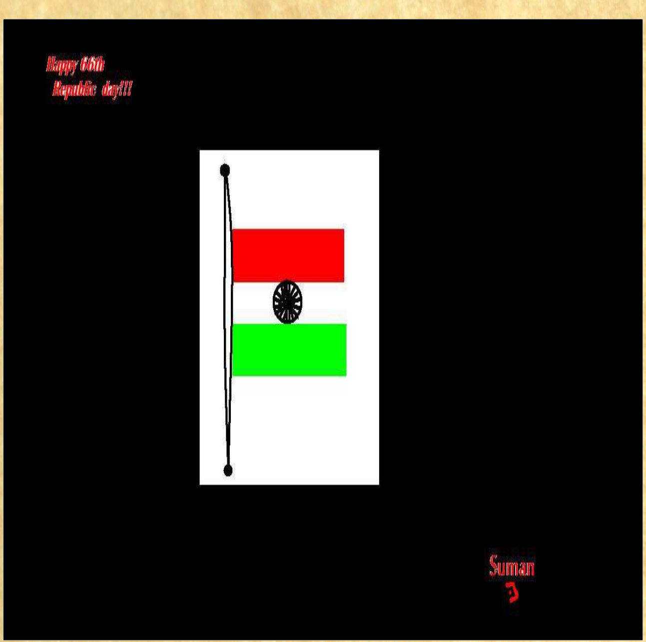

15 अगस्त का दिन है बच्चो
आज का दिन है बड़ा महान
बगिया में इक फूल खिला है
नाम है जिसका हिन्दुस्तान

न जाने इस धरती माता पर
कितनी जानें हैं कुर्बान
जिन वीरों ने प्राण दिये
सब भारत की ही थी सन्तान

सब भारत के वीर थे वे
हिन्दू, सिक्ख या मुसलमान
वीर भी थे, रणधीर भी थे वे
सत्य, न्याय,व मान-धन की
हिन्दुस्तान की, तस्वीर भी थे वे

कितने सिंदूर मिटे इस धरती पर
उन वीरों के बलिदानों से
आओ आज हम सब मिलकर
करें उन वीरों का गुणगान
और मनायें आज़ादी का दिन
आज का दिन है बड़ा महान ।।

-सुमन

सुमन हिन्दी और अंग्रेजी में कविता लिखती हैं और पर्थ, ऑस्ट्रेलिया में एक ग्राफिक कलाकार हैं।

दर्द भरा दर्द – ओज़ी कवितायें

भारत में हिमालय पर्वत और गंगा-जमना की पवित्रता और आध्यात्मिक प्रेरणा ने वैदिक साहित्य में प्राणों का संचार किया था। इस मामले में ऑस्ट्रेलिया बहुत दुर्भाग्यशाली ही कहा जायगा। यहाँ पर तो निर्जन और उबड़-खाबड़ ज़मीन में कष्ट झेलना लोगों की नीयति बन गया था। फिर क्या हो! यह दर्द और इसका रूमानीकरण ही यहाँ के साहित्य में जान फूँकता रहा। पिछली दो शताब्दियों में यहाँ लोक गीतों की जीवन्त परम्परा ने जिस साहित्य को जन्म दिया है - "वाल्ज़िंग मटिल्डा" (Waltzing Matilda) इसका जीवन्त उदाहरण है। प्रेमचन्द की 'गोदान' में शोषण का सताया होरी देश-काल बदल जाने पर मानो इधर आ गया हो - पोटलीधारी मज़दूर के रूप में। इस मज़दूर को तीन पुलिसकर्मी और किसी अवैध कब्जा करने वाले की मिलीभगत ने भेड़ की चोरी के इल्जाम में फँसाया । सज़ा के तौर पर उसे फाँसी भी हो सकती थी। मज़दूर ने सम्मान की रक्षा के लिये पकड़े जाने की अपेक्षा एक झील में डूब कर आत्महत्या करना उचित समझा । कहते हैं आज भी उस झील से गुजरते हुये उसकी आवाज़ सुनाई देती है।

सत्यकथा पर आधारित यह दर्द भरा लोकगीत जिसमें नायक आत्महत्या कर दे वह किसी देश में राष्ट्रीय गीत की तरह माना जाय और इसकी कड़वी सच्चाई से मिलती प्रेरणा इस गीत को ऊँचाई की बुलन्दियों तक पहुँचा दे ऐसा अविश्वसनीय तो लग सकता है पर फिर भी यह सत्य है। शायद पुलिस के आगे समर्पण करके मज़दूर की जान बच भी जाती पर वह उन्हें भटकाता रहा। अंत में महत्वपूर्ण क्या था? उसके प्राणों से जुड़ी कष्टमय और अपमानित ज़िंदगी? या अन्यायी पुलिस को मात देती और उसे जीवित पकड़ पाने में असफलता दे कर मुँह चिढ़ाती हुई मौत? मुझे तो यहाँ कृष्ण की गीता के दर्शन हो गये जिसमें आत्मा का वस्त्र छोड़ कर भी उस मज़दूर ने घुटने नहीं टेके और स्वाभिमान पूर्वक मर कर भी वह कर्म से विमुख नहीं हुआ; फल चाहे जो हो। इस कथा से लोक-मानस में पीड़ा और नैराश्य की चरम सीमा में भी यथार्थ स्थीति का सामना करने की क्षमता उजागर होती है।

बात चली दर्द की और उसके रूमानीकरण की तो ऑस्ट्रेलिया में कैदियों के इतिहास को कैसे भुलाया जा सकता है जिनके जीवन में दर्द तो था पर उसकी अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता नहीं थी। क़ैदियों पर ऐसी सख़्ती कि उनके पास कागज़ का टुकड़ा भी निकल आये तो पीटा जाता था कि ज़रूर वह कोई संदेश भेजने के लिये रखा गया होगा। तो बहुत से अपराधियों ने अपने शरीर को कागज़ बनाया और उस पर न मिटने वाली स्याही से कुछ इस प्रकार से लिखा - "इंग्लैण्ड में कभी भी न उगने पायें गुलाब के फूल / ...जब तक मैं बेचारा, सज़ा का मारा, आज़ादी न पा लूँ" फिर कोई आश्चर्य नहीं कि यहाँ पहला उपन्यास सज़ा प्राप्त हेनरी सावेरी ने बिना अपना नाम दिये प्रकाशित करवाया। नतीजा यह हुआ कि वह बहुत प्रसिद्ध गुमनाम लेखक (!) हो गया।

दर्द की अभिव्यक्ति में बाधा होने से स्थितप्रज्ञ रहना इन कैदियों की मजबूरी थी। वैसे भी अधिकांश कैदी शिकायत करने की अपेक्षा मार सह कर विजय महसूस करते थे क्योंकि मज़ा ले लेकर पीटने वाले से क्या शिकायत करना ! इससे उनके आत्मसमान को चोंट लगती थी। अत: उनकी देशभक्ति विविध रंगों में मिलती है; यहाँ तक कि उसमें विद्रोही स्वर भी मिलते हैं। कवियों को इस हालत का एहसास होने लगा कि ऑस्ट्रेलियावासी जीवन जीने की अपेक्षा ज़िंदा रहने में संतोष कर लेते हैं। तो उन्होने इस आशावाद को जन्म दिया कि ज़िंदगी अरब के रेगिस्तान जैसी सूखी हो तो क्या हुआ यहाँ तो अनेकों पैगम्बर आते हैं।

ऐसे हालात में भला किस तरह रंगीन और इन्द्रधनुषी कवितायें लिखी जाय ? किन्तु लेस मरे (Les Murray) की कविता 'एक निरा सामान्य इन्द्रधनुष' रंगीन न होते हुये भी असामान्य है जो दर्द अभिव्यक्त न करने की कल्चर का मखौल उड़ाती है। दुख में चिल्लाते एक व्यक्ति का रोना ख़ुद से भी अधिक उसे देखने वालों के लिये ज़्यादा महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि वह राह चलते लोगों के लिये बखेड़ा खड़ा कर देता है। उसे देखने वाले भी मन में आँसू टपकाने के लिये ऐसे लालायित हैं जैसे कि बालक इन्द्रधनुष के लिये। पर अन्त में "शब्द नहीं, शोक / कथ्य नहीं केवल दुख / जो कि धरती

की तरह ठोस और सागर की तरह मौज़ूद / पर जब वह रोना बन्द करता है तो हमारी भीड़ का ही हिस्सा बन जाता है / मुँह पोंछ कर अपने स्वाभिमान सहित / आदमी जो रोया था और अब जिसका रोना समाप्त हो चुका है /"

"मेरा देश" (My country) की कवयित्री मानती है कि उसका देश प्रेम अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता है; केवल जिन्होने ऑस्ट्रेलिया को अनुभव किया है वही इसे समझ सकते हैं कि क्यों वह यूरोप छोड़ कर ऑस्ट्रेलिया की सूखी और निर्दय भूमि पर आ गई। एक ओर भारत में गुलामी की निराशा से एक विद्रोही स्वर उभरा था जिसने जन-मन को आभिभूत कर दिया "शस्य शामलाम्, मातरम्, वन्दे मातरम्"। पर यहाँ स्थिति एकदम भिन्न है क्योंकि खलनायक का वेश धरे आता है भौगोलिक परिवेश तो कवयित्री आश्चर्यजनक रूप से यथार्थवादी धरातल पर खड़ी होती है और आशावाद का अलग अंदाज़ दे पाती है - "मेरे दिल के टुकड़े, मेरा देश ! / तेरा निर्दयी नीला आकाश / जिसके नीचे दुखी हो कर देखते हैं / हम पशु को मरते हुये / परन्तु जब भूरे बादल इकठ्ठे होते हैं / तो हम फिर हर्षित होकर आशीष देते हैं / सेना के बजते बैंड को या लगातार गिरती बारिश को/

मेरे दिल के टुकड़े, मेरा देश ! / इन्द्रधनुषी स्वर्ण की भूमि / जो बाढ़, जंगल की आग और अकाल की तीन गुना कीमत चुकाती है / किन्तु प्यासे घुड़दौड़ के मैदान की ओर कई दिनो तक देखने के बाद / हरी चादर जो छा जाती है / हम उसे टुकुर टुकुर देखते हैं।"

बेन्जो पेटर्सन (Benjo Paterson) की "द मेन फ्रोम स्नोई रिवर" एक युवा और उसके नन्हे से घोड़े की गाथा है जिसका पुराने अनुभवी लोग मज़ाक उड़ाते हैं कि वह क्या एक विशिष्ट अमूल्य घोड़े को जंगली घोड़ों के झुंड से छुड़ा कर लायेगा? पर वह निराश और दुखी नहीं होता; हिम्मत और साहस से काम लेता है फिर जहाँ अनुभवी लोग भी नाक़ामयाब होते हैं; वह सफल हो कर दिखाता है।

दुख दर्द की इस गाथा में हम अंत में "फ़ाइव बेल्स" को याद करते हैं जो युद्धोपरान्त लिखी गई कविता है जिसमें कवि को एक मित्र सिडनी हारबर पर मरा हुआ मिलता है तो पूरा जीवन उसकी आँखों के आगे चित्रित होता है – जहाज में बजते घंटों के अंतराल पर - "हे मृत पुरुष ! मैं तेरे बारे में क्यों सोचता हूँ ..../ तू तो इस धरती से विदा हो गया / तू अपने नाम के अर्थ से भी निकल चुका है / फिर भी क्या कुछ है जो होठों को निर्मित कर / आकाश से टकरा कर ऊँची आवाज़ करता है / तो मृत पुरूष ! अपना मुँह बिचका कर / क्या तू मुझ पर चिल्लाता है? / या वाणी की पीड़ा में इन खिड़की के मूक शीशों पर? / तो ज़ोर से चिल्ला और खिड़कियों को बतला दे तेरा नाम / फिर भी मैं कुछ नहीं सुन पाऊँगा / हाँ, यदि कुछ सुन पाऊँगा तो केवल ये घंटियां... /"

-हरिहर झा, भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र (BARC) के कम्प्यूटर-विभाग में वैज्ञानिक अधिकारी के पद पर कार्य करने के पश्चात मेलबर्न के मौसम-विभाग में वरिष्ठ सूचना–तकनीकी अधिकारी के पद पर कार्यरत हैं।

भारती

भारती भारती भारती,
आज है तुमको पुकारती।
देश के युग तरुण कहाँ हो
?
नव सृष्टि के सृजक
कहाँ हो ?
विजय पथ के
धनी कहाँ हो ?
रथ प्रगति का
सजा सारथी।
भारती भारती
भारती,
आज है तुमको पुकारती।
शौर्य सूर्य सा शाश्वत रहे,
धार प्रीत बन गंगा बहे,
जन्म ले जो तुझे माँ कहे,
देव - भू पुण्य है भारती।
भारती भारती भारती,
आज है तुमको पुकारती।

राष्ट्र ध्वज सदा ऊँचा रहे,
चरणों में शीश झुका रहे,
दुश्मन यहाँ न पल भर रहे,
मिल के सब गायें आरती।

भारती भारती भारती,
आज है तुमको पुकारती।

आस्था भक्ति वीरता रहे,
प्रेम, त्याग, मान, दया रहे,
मन में बस मानवता रहे,
माँ अपने पुत्र निहारती।
भारती भारती भारती,
आज है तुमको पुकारती।

द्रोह का कोई न स्वर रहे,
हिंसा से अब न रक्त बहे,
प्रहरी बन हम तत्पर रहें,
सैनिकों को माँ संवारती।
भारती भारती भारती,
आज है तुमको पुकारती।

-कवि कुलवंत सिंह

आई. आई. आई. रूडकी (उत्तराँचल) से शिक्षित कवि कुलवंत सिंह काव्य, लेखन व हिंदी सेवाओं के लिए राजभाषा गौरव से सम्मानित किये जा चुके हैं। वे अनेक पत्रिकाएं व रचनाएँ पर्काशित कर चुके हैं। उनमे निम्नलिखित हैं—निकुंज, परमाणु व विकास, शहीद-ए-आजम भगत सिंह, चिरंतन व अन्य रचनाएँ। *कॉपी राईट:* कुलवंत सिंह, विज्ञान प्रशन मंच

उपरोक्त कविता, *प्रकृति*, कवि कुलवंत सिंह द्वारा सन 2008 में पर्काशित काव्य संग्रह, *चिरंतन*, में से संकलित की गयी है।

वन्देमातरम

आओ गाएँ 'वन्देमातरम'।
भारत माँ की वन्दना करें हम।

ऊँच-नीच का भेद कोई हम नहीं मानते,
जाति-धर्म को भी हम नहीं जानते।
ब्राह्मण हो या कोई और, पर मनुष्य महान है
इस धरती के पुत्र को हम पहचानते।

आओ गाएँ 'वन्देमातरम'।
भारत माँ की वन्दना करें हम।

वे छोटी जाति वाले क्यों हैं क्यों तुम उन्हें कहते अछूत
इसी देश के वासी हैं वे, यही वतन, यहीं उनका वज़ूद
चीनियों की तरह वे, क्या लगते हैं तुम्हें विदेशी?
क्या हैं वे पराए हमसे, नहीं हमारे भाई स्वदेशी?

आओ गाएँ 'वन्देमातरम'।
भारत माँ की वन्दना करें हम।

भारत में है जात-पाँत और हज़ारों जातियाँ
पर विदेशी हमलावरों के विरुद्ध, हम करते हैं क्रांतियाँ
हम सब भाई-भाई हैं, हो कितनी भी खींचतान
रक्त हमारा एक है, हम एक माँ की हैं संतान।

आओ गाएँ 'वन्देमातरम'।
भारत माँ की वन्दना करें हम।

हम से है ताक़त हमारी, विभिन्नता में एकता
शत्रु भय खाता है हमसे, एकजुटता हमारी देखता
सच यही है, जान लो, यही है वह अनमोल ज्ञान
दुनिया में बनाएगा जो, हमें महान में भी महान

आओ गाएँ 'वन्देमातरम'।
भारत माँ की वन्दना करें हम।

हम रहेंगे साथ-साथ, तीस कोटि साथ-साथ
डाल हाथों में हाथ, तीस कोटि हाथ साथ
हम गिरेंगे साथ-साथ, हम मरेंगे साथ-साथ
हम उठेंगे साथ-साथ, जीवित रहेंगे साथ-साथ

आओ गाएँ 'वन्देमातरम'।
भारत माँ की वन्दना करें हम।

-सुब्रह्मण्यम भारती

सुब्रह्मण्यम भारती (11 दिसंबर 1882 - 11 सितंबर 1921), तमिलनाडु भारत, में जन्में एक स्वतंत्रता सेनानी, समाज सुधारक होने के साथ-साथ एक उत्तम श्रेणी के तमिल कवि थे। महाकवि भारती को कई भारतीय भाषाओं में महान अर्थ कवि के रूप में जाना जाता है। भारती गद्य और कविता दोनों रूपों में माहिर थे। भारती तमिल कविता की एक नई शैली शुरू करने में एक अग्रणी थे। उनकी रचनाओं ने जनता रैली करने के लिए दक्षिण भारत में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का समर्थन करने में मदद की। महात्मा गाँधी, बाल गंगाधर तिलक, श्री अरबिंदो आदि उनकी समकालीन महान हस्तियाँ थीं। उपरोक्त कविता मूल तमिल से अनुवाद (कृष्णा की सहायता से): अनिल जनविजय।

गुलदस्ता से

वसन्त : तीन बिम्ब

तुम्हारी बिंदी के साथ
वसन्त आया था
तुम्हारी पगध्वनि के साथ
चला गया
जीवन के साथ ही मृत्यु का अर्थ भी
एक बार और छला गया
है न?

जब अन्दर वसन्त था
बाहर का वसन्त
पदचाप चुराए
चुपचाप गुजर जाता था

अब
जब अन्दर पतझड़ है
तो बाहर का मौसम नितांत अर्थहीन!
अब वसन्त के आने का
आभास नहीं होता

सिर्फ़ सूचना मिलती है
वह भी पत्रों से नहीं
पत्रिकाओं से!

वसन्त भी नेता है गाँवों से जीता है
पर
शहरों में जीता है। -*अनिल वर्मा*

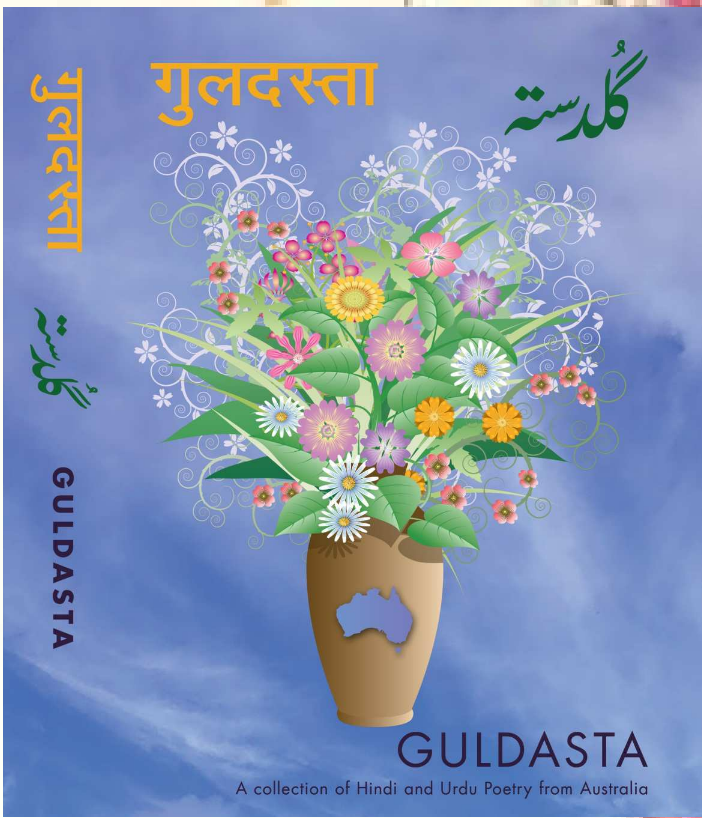

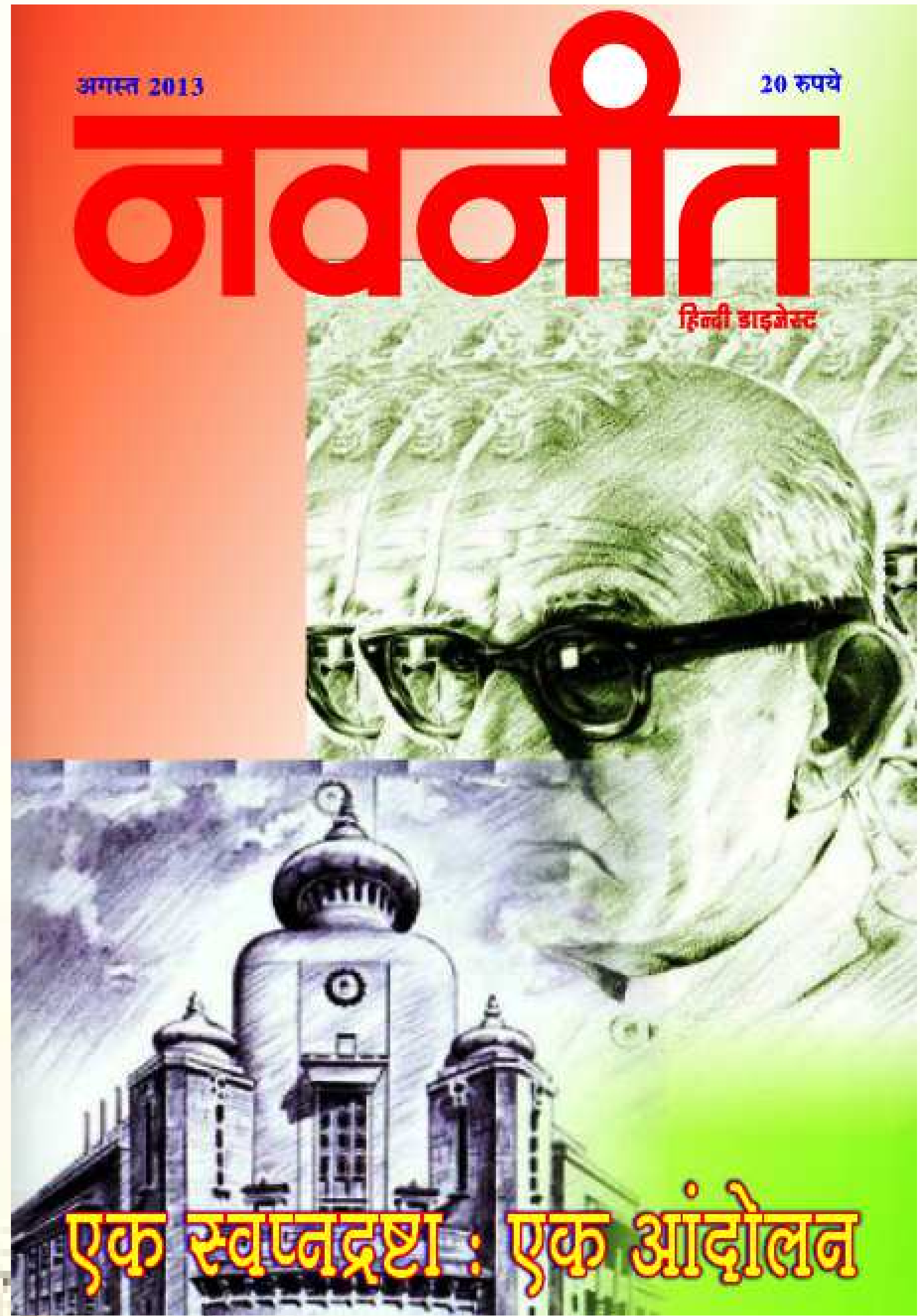

पी. वी. शंकरनकुट्टी द्वारा भारतीय विद्या भवन, के. एम्. मुंशी मार्ग, मुंबई – 400 007 के लिए पर्काशित

तथा सिद्धि प्रिंटर्स, 13/14, भाभा बिल्डिंग, खेतवाडी, 13 लेन, मुंबई – 400 004 में मुद्रित।

ले-आउट एवं डिज़ाइनिंग : समीर पारेख - क्रिएटिव पेज सेटर्स, गोरेगांव, मुंबई – 104, फ़ोन: 98690 08907

संपादक : विश्वनाथ सचदेव

नवनीत अब इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है। **www.navneet.bhavans.info** और साथ ही इन्टरनेट से नवनीत का चंदा भरने के लिए लॉगऑन करें

http://www.bhavans.info/periodical/pay_online.asp

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करे

भारतीय विद्या भवन ऑस्ट्रेलिया

कक्ष 100, 515 केंट स्ट्रीट, सिडनी 2000, जीपीओ बॉक्स 4018, सिडनी 2001, फ़ोन: 1300 242 826 (1300 भवन), फैक्स: 61 2 9267 9005,

ईमेल: **info@bhavanaustralia.org**

नवनीत समर्पण गुजराती में भी उपलब्ध

फ़र्ज़

और फिर कृष्ण ने अर्जुन से कहा
न कोई भाई न बेटा न भतीजा न गुरु
एक ही शक्ल उभरती है हर आईने में
आत्मा मरती नहीं जिस्म बदल लेती है
धड़कन इस सीने की जा छुपती है उस सीने में

जिस्म लेते हैं जनम जिस्म फ़ना होते हैं
और जो इक रोज़ फ़ना होगा वह पैदा होगा
इक कड़ी टूटती है दूसरी बन जाती है
ख़त्म यह सिलसिल-ए-ज़ीस्त भला क्या होगा

रिश्ते सौ, जज्बे भी सौ, चेहरे भी सौ होते हैं
फ़र्ज़ सौ चेहरों में शक्ल अपनी ही पहचानता है
वही महबूब वही दोस्त वही एक अज़ीज़
दिल जिसे इश्क़ और इदराक अमल मानता है

ज़िन्दगी सिर्फ़ अमल सिर्फ़ अमल सिर्फ़ अमल
और यह बेदर्द अमल सुलह भी है जंग भी है
अम्न की मोहनी तस्वीर में हैं जितने रंग
उन्हीं रंगों में छुपा खून का इक रंग भी है

जंग रहमत है कि लानत, यह सवाल अब न उठा
जंग जब आ ही गयी सर पे तो रहमत होगी
दूर से देख न भड़के हुए शोलों का जलाल
इसी दोज़ख़ के किसी कोने में जन्नत होगी

ज़ख़्म खा, ज़ख़्म लगा ज़ख़्म हैं किस गिनती में
फ़र्ज़ ज़ख़्मों को भी चुन लेता है फूलों की तरह
न कोई रंज न राहत न सिले की परवा
पाक हर गर्द से रख दिल को रसूलों की तरह

ख़ौफ़ के रूप कई होते हैं अन्दाज़ कई
प्यार समझा है जिसे खौफ़ है वह प्यार नहीं
उंगलियां और गड़ा और पकड़ और पकड़
आज महबूब का बाज़ू है यह तलवार नहीं
साथियों दोस्तों हम आज के अर्जुन ही तो हैं। -*क़ैफ़ी आज़मी*

-19 जनवरी 1919, आजमगढ़ (उत्तर प्रदेश) में जन्में, 'पद्म श्री' से अलंकृत कैफ़ी आज़मी को उनकी किताब 'आवारा सिज़्दे' के लिये साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा उत्तर प्रदेश उर्दू अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया। हिंदी, उर्दू भाषा में कविता, गजल लिखने वाले कैफ़ी आज़मी को सोवियत लैन्ड नेहरू पुरस्कार, लोटस अवार्ड, महाराष्ट्र उर्दू अकादमी की ओर से विशेष पुरस्कार आदि अन्य अनेक पुरस्कार समय-समय पर मिलते रहे। उन्हें राष्ट्रपति पुरस्कार तथा सन 2000 में दिल्ली सरकार का पहला सहस्त्राब्दि पुरस्कार भी मिला। 10 मई 2002 मुम्बई में उनका निधन हो गया।

तुलसी दास के दोहे

अपने राम को, भजन करौ निरसंक
आदि अन्त निरबाहिवो जैसे नौ को अंक।।

आवत ही हर्षे नही नैनन नही सनेह।
तुलसी तहां न जाइए कंचन बरसे मेह।।

तुलसी मीठे बचन ते सुख उपजत चहु ओर।
बसीकरण एक मंत्र है परिहरु बचन कठोर।।

बिना तेज के पुरूष अवशी अवज्ञा होय।
आगि बुझे ज्यों रख की आप छुवे सब कोय।।

तुलसी साथी विपत्ति के विद्या, विनय, विवेक।
साहस सुकृति सुसत्याव्रत राम भरोसे एक।।

काम क्रोध मद लोभ की जो लौ मन मैं खान।
तौ लौ पंडित मूरखों तुलसी एक समान।।

राम नाम मनि दीप धरु जीह देहरी द्वार।
तुलसी भीतर बहारों जौ चाह्सी उजियार।।

नाम राम को अंक है, सब साधन है सून।
अंक गए कछु हाथ नही, अंक रहे दस गून।।

प्रभु तरु पर, कपि डार पर ते, आपु समान।
तुलसी कहूँ न राम से, साहिब सील निदान।।

तुलसी हरि अपमान तें होई अकाज समाज।
राज करत रज मिली गए सकल सकुल कुरुराज।।

तुलसी दास (1479–1586) ने हिन्दी भाषी जनता को सर्वाधिक प्रभावित किया। इनका ग्रंथ "रामचरित मानस" धर्मग्रंथ के रूप में मान्य है। तुलसी दास का साहित्य समाज के लिए आलोक स्तंभ का काम करता रहा है। इनकी कविताओं में साहित्य और आदर्श का सुन्दर समन्वय हुआ है। *साभार:* www.kavitakosh.org/, चित्र*: www.dlshq.org*

शहीद-ए-आजम भगत सिंह

अर्जुन अब कब पैदा होगा, भीम गदा धर
कब लौटेगा? पुण्य
भूमि बेहाल हुई क्या?
वीरों से कंगाल हुई क्या?

नृपति अशोक चंद्रगुप्त कहाँ?
मर्यादा भारत लुप्त कहाँ?
कहाँ है शान वैशाली की?
मिथिला, मगध, पाटलिपुत्र की?

गौतम हो गये बुद्ध महान,
इस धरती पर लिया था ज्ञान।
दिया कितने देशों को दान,
संदेश दबा वह कहाँ महान?

इसी धरा पर राज किया था,
विक्रमादित्य पर नाज किया था।
जन्मा पृथ्वीराज यहीं क्या?
कर्मभूमि छत्रपति यही क्या?
चेतक पर घूमा करता था, हर पत्ता, बूटा
डरता था।
घास की रोटी वन में खाई,
पराधीनता उसे न भाई।

-कवि कुलवंत सिंह, शहीद-ए-आजम भगत सिंह खंड काव्य

उपरोक्त कविता, *शहीद-ए-आजम भगत सिंह*, कवि कुलवंत सिंह द्वारा सन 2010 में पर्काशित खंड काव्य, *शहीद-ए-आजम भगत सिंह*, में से संकलित की गयी है।

अजहूँ चेति अचेत

अजहूँ चेति अचेत सबै
दिन गए विषय के हेत।
तीनौं पन ऐसैं हीं खोए, केश भए सिर सेत॥
आँखिनि अंध, स्त्रवन नहिं सुनियत, थाके चरन समेत।
गंगा-जल तजि पियत कूप-जल, हरि-तजि पूजत प्रेत॥
मन-बच-क्रम जौ भजै स्याम कौं, चारि पदारथ देत।
ऐसौ प्रभू छाँड़ि क्यौं भटकै, अजहूँ चेति अचेत॥
राम नाम बिनु क्यौं छूटौगे, चंद गहैं ज्यौं केत।
सूरदास कछु खरच न लागत, राम नाम मुख लेत॥

भावार्थ :- यह पद सूर विनय पत्रिका से उद्धृत है। भवसागर से पार उतारने में तो रामनाम रूपी नौका ही एकमात्र सहारा है। उस पतित पावन नाम को ही विषय रस में डूब जाने से भुला दिया जाता है। सभी दिन (पूरी आयु) विषयों के लिये (विषय-सेवन में) ही बीत गये। तीनों (बाल्य, किशोर, तारुण्य) अवस्थाएँ ऐसे ही व्यतीत कर दीं और अब बाल सफेद हो गये बुढ़ापा आ गया। आँखों से अंधा हो गया, कानों से सुनायी नहीं पड़ता, पैरों सहित सभी अङ्ग शिथिल हो गये (कर्मेन्द्रियों की शक्ति भी जाती रही)। गङ्गाजल छोड़कर कुएँ का पानी पीता है और श्रीहरि को छोड़कर प्रेत (शरीर) की पूजा करता है। (इसके बदले) यदि मन, वाणी तथा कर्म से श्रीश्यामसुन्दर का भजन करे तो वे (अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष) चारों पदार्थ देते हैं। अरे मूर्ख! ऐसे प्रभु को छोड़कर (माया में) क्यों भटक रहा है? अब भी सावधान हो जा! राहुग्रस्त चन्द्रमा के समान रामनाम लिये बिना (संसार से) तू कैसे छूट सकता है? (यह पुराणों की कथा है कि भगवान् के चक्र के द्वारा डराये जाने पर ही राहु चन्द्रमा या सूर्य को छोड़ता है।) सूरदासजी कहते हैं कि मुख से रामनाम लेने में कुछ खर्च तो लगता नहीं, फिर भी क्यों नाम नहीं लेता?

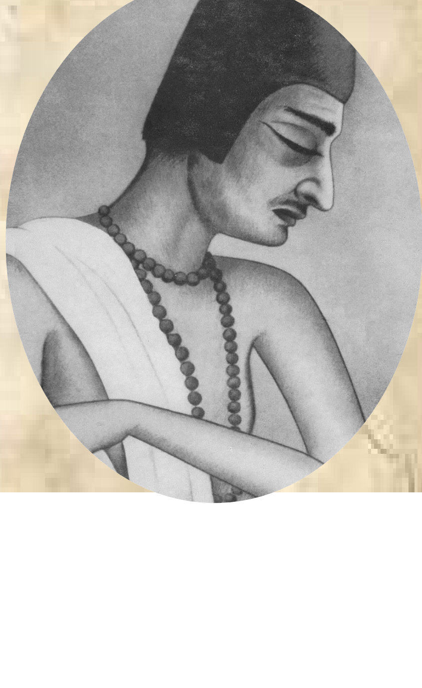

-सूरदास, हिंदी साहित्य में कृष्ण-भक्ति की धारा को प्रवाहित करने वाले भक्त कवियों में महाकवि सूरदास का नाम अग्रणी है। वे भगवान कृष्ण के साथ जुड़े भूमि ब्रज के कवि गायक थे। साहित्य लहरी सूरदास की लिखी रचना मानी जाती है। सूरसागर का मुख्य वर्ण्य विषय श्री कृष्ण की लीलाओं का गान रहा है। सूरसारावली में कवि ने कृष्ण विषयक जिन कथात्मक और सेवापरक पदो का गान किया उन्हीं के सार रूप में उन्होने सारावली की रचना की। *साभार:* www.kavitakosh.org चित्र: *http://bhajansagar.blogspot.com.au*

एक चिनगारी घर को जला देती है

उस समय कादिर कचहरी से बाहर खड़ा था, हुक्म सुनते ही बोला - कोड़ों से मेरी पीठ तो जलेगी ही, परन्तु रहीम को भी भस्म किए बिना न छोड़ूँगा।

रहीम तुरन्त अदालत में गया और बोला - हुजूर, कादिर मेरा घर जलाने की धमकी देता है। कई आदमी गवाह हैं।

हाकिम ने कादिर को बुलाकर पूछा कि क्या बात है।

कादिर - सब झूठ, मैंने कोई धमकी नहीं दी। आप हाकिम हैं। जो चाहें सो करें, पर क्या न्याय इसी को कहते हैं कि सच्चा मारा जाए और झूठा चैन करे?

कादिर की सूरत देखकर हाकिम को निश्चय हो गया कि वह अवश्य रहीम को कोई न कोई कष्ट देगा। उसने कादिर को समझाते हुए कहा - देखो भाई, बुद्धि से काम लो। भला कादिर, गर्भवती स्त्री को मारना क्या ठीक था? यह तो ईश्वर की बड़ी कृपा हुई कि चोट नहीं आई, नहीं तो क्या जाने, क्या हो जाता। तुम विनय करके रहीम से अपना अपराध क्षमा करा लो, मैं हुक्म बदल डालूंगा।

मुंशी - दफा एक सौ सत्तरह के अनुसार हुक्म नहीं बदला जा सकता।

हाकिम - चुप रहो। परमात्मा को शांति प्रिय है, उसकी आज्ञा पालन करना सबका मुख्य धर्म है।

कादिर बोला - हुजूर, मेरी अवस्था अब पचास वर्ष की है। मेरे एक ब्याहा हुआ पुत्र भी है। आज तक मैंने कभी कोड़े नहीं खाए। मैं और उससे क्षमा? कभी नहीं मांग सकता। वह भी मुझे याद करेगा।

यह कहकर कादिर बाहर चला गया।

कचहरी गांव से सात मील पर थी। रहीम को घर पहुंचते-पहुंचते अंधेरा हो गया। उस समय घर में कोई न था। सब बाहर गए हुए थे। रहीम भीतर जाकर बैठ गया और विचार करने लगा। कोड़े लगने का हुक्म सुनकर कादिर का मुख कैसा उतर गया था! बेचारा दीवार की ओर मुंह करके रोने लगा था। हम और वह कितने दिन तक एक साथ खेले हैं, मुझे उस पर इतना क्रोध न करना चाहिए था। यदि मुझे कोड़े मारने का हुक्म सुनाया जाता, तो मेरी क्या दशा होती।

इस पर उसे कादिर पर दया आई। इतने में बूढ़े पिता ने आकर पूछा - कादिर को क्या दंड मिला?

रहीम - बीस कोड़े।

बूढ़ा - बुरा हुआ। बेटा, तुम अच्छा नहीं करते। इन बातों में कादिर की उतनी ही हानि होगी जितनी तुम्हारी। भला, मैं यह पूछता हूं कि कादिर पर कोड़े पड़ने से तुम्हें क्या लाभ होगा?

रहीम - वह फिर ऐसा काम नहीं करेगा।

बूढ़ा - क्या नहीं करेगा, उसने तुमसे बढ़कर कौन-सा बुरा काम किया है?

रहीम - वाह वाह, आप विचार तो करें कि उसने मुझे कितना कष्ट दिया है। स्त्री मरने से बची, अब घर जलाने की धमकी देता है, तो क्या मैं उसका जस गाऊं?

बूढ़ा - (आह भरकर) बेटा, मैं घर में पड़ा रहता हूं और तुम सर्वत्र घूमते हो, इसलिए तुम मुझे मूर्ख समझते हो। लेकिन द्रोह ने तुम्हें अंधा बना रखा है। दूसरों के दोष तुम्हारे नेत्रों के सामने हैं, अपने दोष पीठ पीछे हैं। भला, मैं पूछता हूं कि कादिर ने क्या किया! एक के करने से भी कभी लड़ाई हुआ करती है? कभी नहीं, दो बिना लड़ाई नहीं हो सकती। यदि तुम शान्त स्वभाव के होते, लड़ाई कैसे होती? भला जवाब तो दो, उसकी दाढ़ी के बाल किसने उखाड़े! उसका भूसा

किसने चुराया? उसे अदालत में किसने घसीटा? तिस पर सारे दोष कादिर के माथे ही थोप रहे हो! तुम आप बुरे हो, बस यही सारे झगड़े की जड़ है। क्या मैंने तुम्हें यही शिक्षा दी है? क्या तुम नहीं जानते कि मैं और कादिर का पिता किस प्रेमभाव से रहते थे। यदि किसी के घर में अन्न चुक जाता था, तो एक-दूसरे से उधार लेकर काम चलता था; यदि कोई किसी और काम में लगा होता था, तो दूसरा उसके पशु चरा लाता था। एक को किसी वस्तु की जरूरत होती थी, तो दूसरा तुरन्त दे देता था। न कोई लड़ाई थी न झगड़ा, प्रेमप्रीतिपूर्वक जीवन व्यतीत करता था। अब? अब तो तुमने महाभारत बना रखा है, क्या इसी का नाम जीवन है? हाय! हाय! यह तुम क्या पाप कर्म कर रहे हो? तुम घर के स्वामी हो, यमराज के सामने तुम्हें उत्तर देना होगा। बालकों और स्त्रियों को तुम क्या शिक्षा दे रहे हो, गाली बकना और ताने देना! कल तारावती पड़ोसिन धनदेवी को गालियां दे रही थी। उसकी माता पास बैठी सुन रही थी। क्या यही भलमनसी है? क्या गाली का बदला गाली होना चाहिए? नहीं बेटा, नहीं, महापुरुषों का वचन है कि कोई तुम्हें गाली दे तो सह लो, वह स्वयं पछताएगा। यदि कोई तुम्हारे गाल पर एक चपत मारे, तो दूसरा गाल उसके सामने कर दो, वह लज्जित और नम्र होकर तुम्हारा भक्त हो जाएगा। अभिमान ही सब दुःख का कारण है - तुम चुप क्यों हो गए! क्या मैं झूठ कहता हूं?

रहीम चुप रह गया, कुछ नहीं बोला।

बूढ़ा - महात्माओं का वाक्य क्या असत्य है, कभी नहीं। उसका एक-एक अक्षर पत्थर की लकीर है। अच्छा, अब तुम अपने इस जीवन पर विचार करो। जब से यह महाभारत आरम्भ हुआ है, तुम सुखी हो अथवा दुःखी! जरा हिसाब तो लगाओ कि इन मुकदमों, वकीलों और जाने-आने में कितना रुपया खर्च हो चुका है। देखो, तुम्हारे पुत्र कैसे सुन्दर और बलवान हैं, लेकिन तुम्हारी आमदनी घटती जाती है। क्यों? तुम्हारी मूर्खता से। तुम्हें चाहिए कि लड़कों सहित खेती का काम करो। पर तुम पर तो लड़ाई का भूत सवार है, वह चैन लेने नहीं देता। पिछले साल जई क्यों नहीं उगी, इसलिए कि समय पर नहीं बोई गई। मुकदमे चलाओ कि जई बोओ। बेटा, अपना काम करो, खेतीबारी को सम्हालो। यदि कोई कष्ट दे तो उसे क्षमा करो, परमात्मा इसी से प्रसन्न रहता है। ऐसा करने पर तुम्हारा अंतःकरण शुद्ध होकर तुम्हें आनन्द प्राप्त होगा।

रहीम कुछ नहीं बोला।

बूढ़ा - बेटा, अपने बूढ़े, मूर्ख पिता का कहना मानो। जाओ, कचहरी में जाकर आपस में राजीनामा कर लो। कल शबेरात है, कादिर के घर जाकर नम्रतापूर्वक उसे नेवता दो और घर वालों को भी यही शिक्षा दो कि बैर छोड़कर आपस में प्रेम बढ़ाएँ।

पिता की बातें सुनकर रहीम के मन में विचार हुआ कि पिताजी सच कहते हैं। इस लड़ाई-झगड़े से हम मिट्टी में मिले जाते हैं। लेकिन इस महाभारत को किस प्रकार समाप्त करूं? बूढ़ा उसके मन की बात जानकर बोला - बेटा, मैं तुम्हारे मन की बात जान गया। लज्जा त्याग जाकर कादिर से मित्रता कर लो। फैलने से पहले ही चिनगारी को बुझा देना उचित है, फैल जाने पर फिर कुछ नहीं बनता।

बूढ़ा कुछ और कहना चाहता था कि स्त्रियां कोलाहल करती हुई भीतर आ गईं, उन्होंने कादिर के दंड का हाल सुन लिया था। हाल में पड़ोसिन से लड़ाई करके आई थीं, आकर कहने लगीं कि कादिर यह भय दिखाता है कि मैंने घूस देकर हाकिम को अपनी ओर फेर लिया है, रहीम का सारा हाल लिखकर महाराज की सेवा में भेजने के लिए विनयपत्र तैयार किया है। देखो, क्या मजा चखाता हूं। आधी जायदाद न छीन ली तो बात ही क्या है? यह सुनना था कि रहीम के चित्त में फिर आग दहक उठी।

आषाढ़ी बोने की ऋतु थी। करने को काम बहुत था। रहीम भुसौल में गया और पशुओं को भूसा डालकर कुछ काम करने लगा। इस समय वह पिता की बातें और कादिर के साथ लड़ाई सब कुछ भूला हुआ था। रात को घर में आकर आराम

करना ही चाहता था कि पास से शब्द सुनाई दिया - वह दुष्ट वध करने ही योग्य है, जीकर क्या बनाएगा। इन शब्दों ने रहीम को पागल बना दिया। वह चुपचाप खड़ा कादिर को गालियां सुनाता रहा। जब वह चुप हो गया, तो वह घर में चला गया।

भीतर आकर देखा कि बहू बैठी ताक रही है, स्त्री भोजन बना रही है, बड़ा लड़का दूध गर्म कर रहा है, मंझला झाड़ू लगा रहा है, छोटा भैंस चराने बाहर जाने को तैयार है। सुख की यह सब सामग्री थी, परन्तु पड़ोसी के साथ लड़ाई का दुःख सहा न जाता था।

वह जला-भुना भीतर आया। उसके कान में पड़ोसी के शब्द गूंज रहे थे, उसने सबसे लड़ना आरम्भ किया। इतने में छोटा लड़का भैंस चराने बाहर जाने लगा। रहीम भी उसके साथ बाहर चला आया। लड़का तो चल दिया, वह अकेला रह गया। रहीम मन में सोचने लगा - कादिर बड़ा दुष्ट है, हवा चल रही है, ऐसा न हो पीछे से आकर मकान में आग लगाकर भाग जाए। क्या अच्छा हो कि जब वह आग लगाने आए, तब उसे मैं पकड़ लूं। बस फिर कभी नहीं बच सकता, अवश्य उसे बन्दीखाने जाना पड़े।

यह विचार करके वह गली में पहुंच गया। सामने उसे कोई चीज़ हिलती दिखाई दी। पहले तो वह समझा कि कादिर है, पर वहां कुछ न था - चारों ओर सन्नाटा था।

थोड़ी दूर आगे जाकर देखता क्या है कि पशुशाला के पास एक मनुष्य जलता हुआ फूस का पूला हाथ में लिए खड़ा है। ध्यान से देखने पर मालूम हुआ कि कादिर है। फिर क्या था, जोर से दौड़ा कि उसे जाकर पकड़ ले।

रहीम अभी वहां पहुंचने न पाया था कि छप्पर में आग लगी, उजाला होने पर कादिर प्रत्यक्ष दिखाई देने लगा। रहीम बाज की तरह झपटा, लेकिन कादिर उसकी आहट पाकर चम्पत हो गया।

रहीम उसके पीछे दौड़ा। उसके कुरते का पल्ला हाथ में आया ही था कि वह छुड़ाकर फिर भागा। रहीम धड़ाम से पृथ्वी पर गिर पड़ा, उठकर फिर दौड़ा। इतने में कादिर अपने घर पहुंच गया। रहीम वहां जाकर उसे पकड़ना चाहता था कि उसने ऐसा लट्ठ मारा कि रहीम चक्कर खाकर बेसुध हो धरती पर गिर पड़ा। सुध आने पर उसने देखा कि कादिर वहां नहीं है, फिरकर देखता है तो पशुशाला का छप्पर जल रहा है, ज्वाला प्रचंड हो रही है और लपटें निकल रही हैं।

रहीम सिर पीटकर पुकराने लगा - भाइयो, यह क्या हुआ! हाय, मेरा सत्यानाश हो गया! चिल्लाते-चिल्लाते उसका कंठ बैठ गया। वह दौड़ना चाहता था, परन्तु उसकी टांगें लड़खड़ा गईं। वह धम से धरती पर गिर पड़ा, फिर उठा, घर के पास पहुंचते-पहुंचते आग चारों ओर फैल गई। अब क्या बन सकता है? भय से पड़ोसी भी अपना असबाब बाहर फेंकने लगे। वायु के वेग से कादिर के घर में भी आग जा लगी, यहां तक कि आधा गांव जलकर राख का ढेर हो गया। रहीम और कादिर दोनों का कुछ न बचा। मुर्गियां, हल, गाड़ी, पशु, वस्त्र, अन्न, भूसा आदि सब कुछ स्वाहा हो गया। इतना अच्छा हुआ कि किसी की जान नहीं गई।

आग रात भर जलती रही। वह कुछ असबाब उठाने भीतर गया, परन्तु ज्वाला ऐसी प्रचंड थी कि जा न सका। उसके कपड़े और दाढ़ी के बाल झुलस गए।

प्रातःकाल गांव के चौधरी का बेटा उसके पास आया और बोला - रहीम, तुम्हारे पिता की दशा अच्छी नहीं है। वह तुम्हें बुला रहे हैं। रहीम तो पागल हो रहा था, बोला - कौन पिता जी ?

चौधरी का बेटा - तुम्हारे पिता। इसी आग ने उनका काम तमाम कर दिया है। हम उन्हें यहां से उठाकर अपने घर ले गए थे। अब वह बच नहीं सकते। चलो, अंतिम भेंट कर लो।

रहीम उसके साथ हो लिया। वहां पहुंचने पर चौधरी ने बूढ़े को खबर दी कि रहीम आ गया है।

बूढ़े ने रहीम को अपने निकट बुलाकर कहा - बेटा, मैंने तुमसे क्या कहा था। गांव किसने जलाया?

रहीम - कादिर ने। मैंने आप उसे छप्पर में आग लगाते देखा था। यदि मैं उसी समय उसे पकड़कर पूले को पैरों तले मल देता, तो आग कभी न लगती।

बूढ़ा - रहीम, मेरा अन्त समय आ गया। तुमको भी एक दिन अवश्य मरना है, पर सच बतलाओ कि दोष किसका है?

रहीम चुप हो गया।

बूढ़ा - बताओ, कुछ बोलो तो, फिर यह सब किसकी करतूत है, किसका दोष है?

रहीम - (आंखों में आंसू भरकर) मेरा! पिताजी, क्षमा कीजिए, मैं खुदा और आप दोनों का अपराधी हूं।

बूढ़ा - रहीम!

रहीम - हां, पिताजी।

बूढ़ा - जानते हो अब क्या करना उचित है?

रहीम - मैं क्या जानूं, मेरा तो अब गांव में रहना कठिन है।

बूढ़ा - यदि तू परमेश्वर की आज्ञा मानेगा तो तुझे कोई कष्ट न होगा। देख, याद रख, अब किसी से न कहना कि आग किसने लगाई थी। जो पुरुष किसी का एक दोष क्षमा करता है, परमात्मा उसके दो दोष क्षमा करता है।

यह कहकर खुदा को याद करते हुए बूढ़े ने प्राण त्याग दिए।

रहीम का क्रोध शांत हो गया। उसने किसी को न बतलाया कि आग किसने लगाई थी। पहलेपहल तो कादिर डरता रहा कि रहीम के चुप रह जाने में भी कोई भेद है, फिर कुछ दिनों पीछे उसे विश्वास हो गया कि रहीम के चित्त में अब कोई बैरभाव नहीं रहा।

बस, फिर क्या था - प्रेम में शत्रु भी मित्र हो जाते हैं। वे पासपास घर बनाकर पड़ोसियों की भांति रहने लगे।

रहीम अपने पिता का उपदेश कभी न भूलता था कि फैलने से पहले ही चिनगारी को बुझा देना उचित है। अब यदि कोई कष्ट देता, तो वह बदला लेने की इच्छा नहीं करता। यदि कोई उसे गाली देता, तो सहन करके वह यह उपदेश करता कि कुवचन बोलना अच्छा नहीं। अपने घर के प्राणियों को भी वह यही उपदेश दिया करता। पहले की अपेक्षा अब उसका जीवन बड़े आनन्दपूर्वक कटता है।

अनुवाद - प्रेमचंद

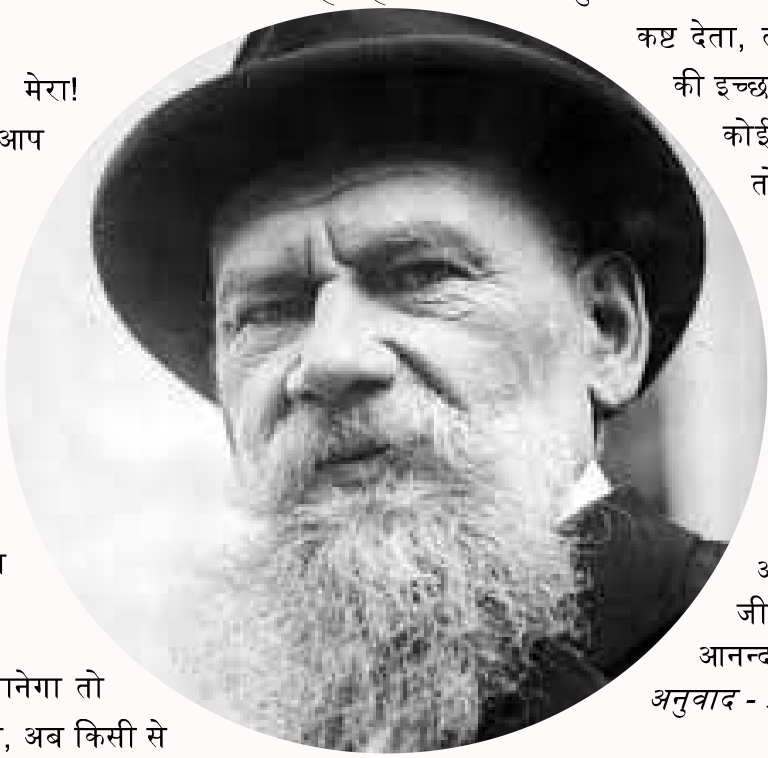

-लियो टॉलस्टॉय उन्नीसवीं सदी के सर्वाधिक सम्मानित लेखकों में से एक हैं। उनका जन्म 9 सितम्बर 1828 को रूस के एक संपन्न परिवार में हुआ। उन्होंने रूसी सेना में भर्ती होकर क्रीमियन युद्ध (1855) में भाग लिया, लेकिन अगले ही वर्ष सेना छोड़ दी। लेखन के प्रति उनकी रुचि सेना में भर्ती होने से पहले ही जाग चुकी थी। उनके उपन्यासों 'वॉर एंड पीस' (1865-69) तथा 'एना कैरनीना' (1875-77) को साहित्यिक जगत में क्लासिक का दर्जा प्राप्त है। मन की शांति की तलाश में 1890 में उन्होंने अपनी दौलत का त्याग कर दिया और गरीबों की सेवा के लिए परिवार छोड़ दिया। 20 नवंबर 1910 को उनका देहांत हो गया।

साभार: http://www.hindisamay.com

1947

सूखी धरती के दिल की दरारों में
लहू सिंचा लाखों मासूम इंसानों का
दूध पीते बच्चों का, लाठी टेक बूढों का
बहनों, माओं, नानियों, दादियों का,
हिन्दू, मुसलमान, सिख, इसाई, पारसियों का
लाल, हरे, भगवे, सब-रंगी झंडे वालों का।

लाखों जले हुए घरों की राख से निकली
अस्थियां दफन हो गयीं दिल की दरारों में
बेघर अनाथों के आंसूओं की धाराएं बहीं
सालों -साल।

बंजर धरती के दिल की दरारों में -
गुम हो गयीं।

फिर भी
एक भी फूल नहीं खिला मुहब्बत का।

न जाने कौन सा था वो मौसम
न जाने कब कहाँ से आ गिरे थे
बंजर धरती के दिल की दरारों में बीज
जो उठ खड़ी हुई थी वो हैवानी फसल
रातों रात
जो क़त्ल हो गयी इंसानियत
और शुरू हो गई सल्तनत शैतानियत की
रातों रात।

जंगली पौदों से पनपे हैं
बढे हैं इनके कुनबे

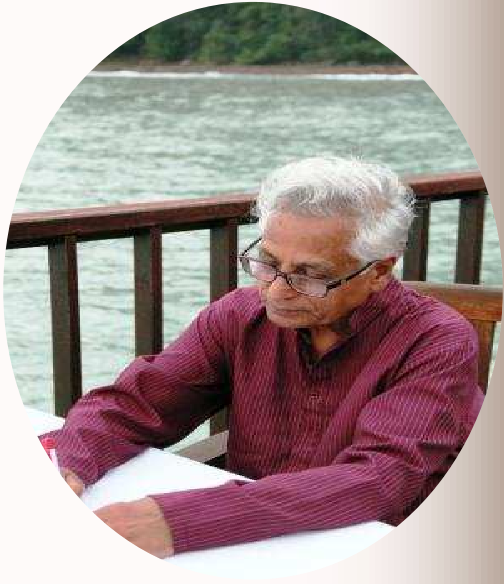

बेख़ौफ़ चल रही है इनकी हुकूमत
नफरत की, हैवानियत की सियासत।
न जाने कब तक रहेगी धरती सूखी-प्यासी
न जाने बदलेगा कब ये मौसम
एक भी बीज फूटा नहीं मुहब्बत का
अब तक -
कब तक चलेगा ये कलियुग!

-प्रेम माथुर, 73वें साल में 'बूमेरंग' में कवितायेँ प्रकाशित! 75 वर्ष की आयु में पहली कहानी प्रकाशित!! और अंग्रेजी भाषा शिक्षण के विशेषज्ञ रहे 45 साल तक!!! पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया के हिंदी समाज भूतपूर्व अध्यक्ष, अब लेखन के अलावा पर्थ के सीनियर सिटीजंस (वरिष्ठ नागरिकों की) रविवारीय गोष्ठी 'संस्कृति' में गीत-संगीत-साहित्य से मन बहलाते हैं। प्रकाशनाधिकृत: प्रेम माथुर

अमृतसर आ गया है

गाड़ी के डिब्बे में बहुत मुसाफिर नहीं थे। मेरे सामनेवाली सीट पर बैठे सरदार जी देर से मुझे लाम के किस्से सुनाते रहे थे। वह लाम के दिनों में बर्मा की लड़ाई में भाग ले चुके थे और बात-बात पर खी-खी करके हँसते और गोरे फौजियों की खिल्ली उड़ाते रहे थे। डिब्बे में तीन पठान व्यापारी भी थे, उनमें से एक हरे रंग की पोशाक पहने ऊपरवाली बर्थ पर लेटा हुआ था। वह आदमी बड़ा हँसमुख था और बड़ी देर से मेरे साथवाली सीट पर बैठे एक दुबले-से बाबू के साथ उसका मजाक चल रहा था। वह दुबला बाबू पेशावर का रहनेवाला जान पड़ता था क्योंकि किसी-किसी वक्त वे आपस में पश्तो में बातें करने लगते थे। मेरे सामने दाईं ओर कोने में, एक बुढ़िया मुँह-सिर ढाँपे बैठा थी और देर से माला जप रही थी। यही कुछ लोग रहे होंगे। संभव है दो-एक और मुसाफिर भी रहे हों, पर वे स्पष्टत: मुझे याद नहीं।

गाड़ी धीमी रफ्तार से चली जा रही थी, और गाड़ी में बैठे मुसाफिर बतिया रहे थे और बाहर गेहूँ के खेतों में हल्की-हल्की लहरियाँ उठ रही थीं, और मैं मन-ही-मन बड़ा खुश था क्योंकि मैं दिल्ली में होनेवाला स्वतंत्रता-दिवस समारोह देखने जा रहा था।

उन दिनों के बारे में सोचता हूँ, तो लगता है, हम किसी झुटपुटे में जी रहे हैं। शायद समय बीत जाने पर अतीत का सारा व्यापार ही झुटपुटे में बीता जान पड़ता है। ज्यों-ज्यों भविष्य के पट खुलते जाते हैं, यह झुटपुटा और भी गहराता चला जाता है।

उन्हीं दिनों पाकिस्तान के बनाए जाने का ऐलान किया गया था और लोग तरह-तरह के अनुमान लगाने लगे थे कि भविष्य में जीवन की रूपरेखा कैसी होगी। पर किसी की भी कल्पना बहुत दूर तक नहीं जा पाती थी। मेरे सामने बैठे सरदार जी बार-बार मुझसे पूछ रहे थे कि पाकिस्तान बन जाने पर जिन्ना साहिब बंबई में ही रहेंगे या पाकिस्तान में जा कर बस जाएँगे, और मेरा हर बार यही जवाब होता - बंबई क्यों छोड़ेंगे, पाकिस्तान में आते-जाते रहेंगे, बंबई छोड़

देने में क्या तुक है! लाहौर और गुरदासपुर के बारे में भी अनुमान लगाए जा रहे थे कि कौन-सा शहर किस ओर जाएगा। मिल बैठने के ढंग में, गप-शप में, हँसी-मजाक में कोई विशेष अंतर नहीं आया था। कुछ लोग अपने घर छोड़ कर जा रहे थे, जबकि अन्य लोग उनका मजाक उड़ा रहे थे। कोई नहीं जानता था कि कौन-सा कदम ठीक होगा और कौन-सा गलत। एक ओर पाकिस्तान बन जाने का जोश था तो दूसरी ओर हिंदुस्तान के आजाद हो जाने का जोश। जगह-जगह दंगे भी हो रहे थे, और योम-ए-आजादी की तैयारियाँ भी चल रही थीं। इस पृष्ठभूमि में लगता, देश आजाद हो जाने पर दंगे अपने-आप बंद हो जाएँगे। वातावरण में इस झुटपुट में आजादी की सुनहरी धूल-सी उड़ रही थी और साथ-ही-साथ अनिश्चय भी डोल रहा था, और इसी अनिश्चय की स्थिति में किसी-किसी वक्त भावी रिश्तों की रूपरेखा झलक दे जाती थी।

शायद जेहलम का स्टेशन पीछे छूट चुका था जब ऊपर वाली बर्थ पर बैठे पठान ने एक पोटली खोल ली और उसमें से उबला हुआ मांस और नान-रोटी के टुकड़े निकाल-निकाल कर अपने साथियों को देने लगा। फिर वह हँसी-मजाक के बीच मेरी बगल में बैठे बाबू की ओर भी नान का टुकड़ा और मांस की बोटी बढ़ा कर खाने का आग्रह करने लगा था - 'खा ले, बाबू, ताकत आएगी। अम जैसा ओ जाएगा। बीवी बी तेरे सात कुश रएगी। काले दालकोर, तू दाल काता ए, इसलिए दुबला ए...'

डिब्बे में लोग हँसने लगे थे। बाबू ने पश्तो में कुछ जवाब दिया और फिर मुस्कराता सिर हिलाता रहा।

इस पर दूसरे पठान ने हँस कर कहा - 'ओ जालिम, अमारे हाथ से नई लेता ए तो अपने हाथ से उठा ले। खुदा कसम बकरे का गोश्त ए, और किसी चीज का नईए।'

ऊपर बैठा पठान चहक कर बोला - 'ओ खंजीर के तुम, इदर तुमें कौन देखता ए? अम तेरी बीवी को नई बोलेगा। ओ तू अमारे साथ बोटी तोड़। अम तेरे साथ दाल पिएगा...'

इस पर कहकहा उठा, पर दुबला-पतला बाबू हँसता, सिर हिलाता रहा और कभी-कभी दो शब्द पश्तो में भी कह देता।

'ओ कितना बुरा बात ए, अम खाता ए, और तू अमारा मुँ देखता ए...' सभी पठान मगन थे।

'यह इसलिए नहीं लेता कि तुमने हाथ नहीं धोए हैं,' स्थूलकाय सरदार जी बोले और बोलते ही खी-खी करने लगे! अधलेटी मुद्रा में बैठे सरदार जी की आधी तोंद सीट के नीचे लटक रही थी - 'तुम अभी सो कर उठे हो और उठते ही पोटली खोल कर खाने लग गए हो, इसीलिए बाबू जी तुम्हारे हाथ से नहीं लेते, और कोई बात नहीं।' और सरदार जी ने मेरी ओर देख कर आँख मारी और फिर खी-खी करने लगे।

'मांस नई खाता ए, बाबू तो जाओ जनाना डब्बे में बैटो, इदर क्या करता ए?' फिर कहकहा उठा।

डब्बे में और भी अनेक मुसाफिर थे लेकिन पुराने मुसाफिर यही थे जो सफर शुरू होने में गाड़ी में बैठे थे। बाकी मुसाफिर उतरते-चढ़ते रहे थे। पुराने मुसाफिर होने के नाते उनमें एक तरह की बेतकल्लुफी आ गई थी।

'ओ इदर आ कर बैठो। तुम अमारे साथ बैटो। आओ जालिम, किस्सा-खानी की बातें करेंगे।'

तभी किसी स्टेशन पर गाड़ी रुकी थी और नए मुसाफिरों का रेला अंदर आ गया था। बहुत-से मुसाफिर एक साथ अंदर घुसते चले आए थे।

'कौन-सा स्टेशन है?' किसी ने पूछा।

'वजीराबाद है शायद,' मैंने बाहर की ओर देख कर कहा।

गाड़ी वहाँ थोड़ी देर के लिए खड़ी रही। पर छूटने से पहले एक छोटी-सी घटना घटी। एक आदमी साथ वाले डिब्बे में से पानी लेने उतरा और नल पर जा कर पानी लोटे में भर रहा था तभी वह भाग कर अपने डिब्बे की ओर लौट आया। छलछलाते लोटे में से पानी गिर रहा था। लेकिन जिस ढंग से वह भागा था, उसी ने बहुत कुछ बता दिया था। नल पर खड़े और लोग भी, तीन-चार आदमी रहे होंगे - इधर-उधर अपने-अपने डिब्बे की ओर भाग गए थे। इस तरह घबरा कर भागते लोगों को मैं देख चुका था। देखते-ही-देखते प्लेटफार्म खाली हो गया। मगर डिब्बे के अंदर अभी भी हँसी-मजाक चल रहा था। *(जारी ...)*

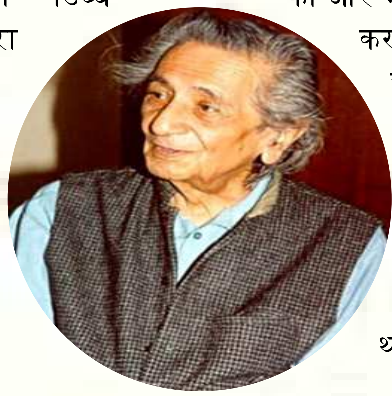

रावलपिंडी पाकिस्तान में जन्मे **भीष्म साहनी** (8 अगस्त 1915 - 11 जुलाई 2003) आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रमुख स्तंभों में से थे। 1937 में लाहौर गवर्नमेन्ट कॉलेज, लाहौर से अंग्रेजी साहित्य में एम ए करने के बाद साहनी ने 1958 में पंजाब विश्वविद्यालय से पीएचडी की उपाधि हासिल की। इसके पश्चात अंबाला और अमृतसर में भी अध्यापक रहने के बाद दिल्ली विश्वविद्यालय में साहित्य के प्रोफेसर ने। इन्होंने करीब दो दर्जन रूसी किताबें जैसे टालस्टॉय आस्ट्रोवस्की इत्यादि लेखकों की किताबों का हिंदी में रूपांतर किया।
भीष्म साहनी को हिन्दी साहित्य में प्रेमचंद की परंपरा का अग्रणी लेखक माना जाता है। उन्हें 1975 में तमस के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार, शिरोमणि लेखक अवार्ड (पंजाब सरकार), 1980 में एफ्रो एशियन राइटर्स असोसिएशन का लोटस अवार्ड, 1983 में सोवियत लैंड नेहरू अवार्ड तथा 1998 में भारत सरकार के पद्मभूषण अलंकरण से विभूषित किया गया। उनके उपन्यास तमस पर 1986 में एक फिल्म का निर्माण भी किया गया था।
*प्रमुख रचनाएँ: **उपन्यास**: झरोखे, तमस, बसन्ती, मायादास की माडी, कुन्तो, नीलू निलिमा निलोफर, **कहानी संग्रह**: मेरी प्रिय कहानियां, भाग्यरेखा, वांगचू, निशाचर, **नाटक**: हनूश, माधवी, कबीरा खड़ा बजार में, मुआवज़े, **आत्मकथा**: बलराज माय ब्रदर, **बालकथा**: गुलेल का खेल।*
साभार: www.hindisamay.com

भारतीय विद्या भवन ऑस्ट्रेलिया राजपत्र

भारतीय विद्या भवन (*भवन*) एक गैर लाभ, गैर धार्मिक, गैर राजनीतिक, गैर सरकारी संगठन (एनजीओ) है| भवन भारतीय परंपराओं को ऊपर उठाये हुए, उसी समय में आधुनिकता और बहुसंस्कृतिवाद की जरूरतों को पूरा करते हुए विश्व के शैक्षिक और सांस्कृतिक संबंधों में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है| भवन का आदर्श, '*पूरी दुनिया एक ही परिवार है*' और इसका आदर्श वाक्य: '*महान विचारों को हर दिशा से हमारे पास आने दो*' हैं|

दुनिया भर में भवन के अन्य केन्द्रों की तरह, भवन ऑस्ट्रेलिया अंतर-सांस्कृतिक गतिविधियों की सुविधा प्रदान करता है और भारतीय संस्कृति की सही समझ, बहुसंस्कृतिवाद के लिए एक मंच प्रदान करता है और ऑस्ट्रेलिया में व्यक्तियों, सरकारों और सांस्कृतिक संस्थानों के बीच करीबी सांस्कृतिक संबंधों का पालन करता है|

अपने संविधान से व्युत्पन्न भवन ऑस्ट्रेलिया **राजपत्र** का कार्य है:

- जनता की शिक्षा अग्रिम करना, इनमें हैं:
    1. विश्व की संस्कृतियां (दोनों आध्यात्मिक और लौकिक),
    2. साहित्य, संगीत, नृत्य,
    3. कलाएं,
    4. दुनिया की भाषाएँ,
    5. दुनिया के दर्शनशास्त्र |
- ऑस्ट्रेलिया की बहुसांस्कृतिक समाज के सतत विकास के लिए संस्कृतियों की विविधता के योगदान के बारे में जागरूकता को बढ़ावा|
- समझ और व्यापक रूप से विविध विरासत के ऑस्ट्रेलियाई लोगों की सांस्कृतिक, भाषाई और जातीय विविधता की स्वीकृति को बढ़ावा|
- भवन की वस्तुओं को बढ़ावा देने या अधिकृत रूप में शिक्षा अग्रिम करने के लिए संस्कृत, अंग्रेजी और अन्य भाषाओं में पुस्तकों, पत्रिकाओं और नियतकालिक पत्रिकाओं, वृत्तचित्रों को संपादित, प्रकाशित और जारी करना|
- भवन के हित में अनुसंधान अध्ययन का पालन करना और शुरू करना और किसी भी अनुसंधान को जो कि शुरू किया गया है, के परिणाम को मुद्रित और प्रकाशित करना| www.bhavanaustralia.org

भवन के अस्तित्व के अधिकार का परीक्षण

भवन के अस्तित्व के अधिकार का परीक्षण है कि क्या वो जो विभिन्न क्षेत्रों में और विभिन्न स्थानों में इसके लिए काम करते हैं और जो इसके कई संस्थानों में अध्ययन करते हैं, वे अपने व्यक्तिगत जीवन में एक मिशन की भावना विकसित कर सकें, चाहे एक छोटे माप में, जो उन्हें मौलिक मूल्यों का अनुवाद करने में सक्षम बनाएगा|

एक संस्कृति की रचनात्मक जीवन शक्ति इसमें होती है: कि क्या जो इससे सम्बंधित हैं उनमें 'सर्वश्रेष्ठ', हालांकि उनकी संख्या चाहे कितनी कम हो, हमारे चिरयुवा संस्कृति के मौलिक मूल्यों तक जीने में आत्म-पूर्ति पाते हों|

यह एहसास किया जाना चाहिए कि दुनिया का इतिहास उन पुरुषों की एक कहानी है जिन्हें खुद में और अपने मिशन में विश्वास था| जब एक उम्र विश्वास के ऐसे पुरुषों का उत्पादन नहीं करती तो इसकी संस्कृति अपने विलुप्त होने के रास्ते पर है| इसलिए भवन की असली ताकत इसकी अपनी इमारतों या संस्थाओं की संख्या जो यह आयोजित करती है, में इतनी ज्यादा नहीं होगी, ना ही इसकी अपनी संपत्ति की मात्रा और बजट में, और इसकी अपनी बढ़ती प्रकाशन, सांस्कृतिक और शैक्षिक गतिविधियों में भी नहीं होगी| यह इसके मानद और वृत्तिकाग्राही, समर्पित कार्यकर्ताओं के चरित्र, विनम्रता, निस्वार्थता और समर्पित काम में होगी| उस अदृश्य दबाव को केवल जो अकेला मानव प्रकृति को रूपांतरित कर सकता है, को खेल में लाते हुए केवल वे अकेले पुनर्योजी प्रभावों को रिहा कर सकते हैं|

गोपाल और मिट्ठू

बंदरों के तमाशे तो तुमने बहुत देखे होंगे। मदारी के इशारों पर बंदर कैसी-कैसी नकलें करता है, उसकी शरारतें भी तुमने देखी होंगी। तुमने उसे घरों से कपड़े उठाकर भागते देखा होगा। पर आज हम तुम्हें एक ऐसा हाल सुनाते हैं, जिससे मालूम होगा कि बंदर लड़कों से दोस्ती भी कर सकता है। कुछ दिन हुए लखनऊ में एक सर्कस कंपनी आई थी। उसके पास शेर, भालू, चीता और कई तरह के और भी जानवर थे। इनके सिवा एक बंदर मिट्ठू भी था।

लड़कों के झुंड-के-झुंड रोज इन जानवरों को देखने आया करते थे। मिट्ठू ही उन्हें सबसे अच्छा लगता। उन्हीं लड़कों में गोपाल भी था। वह रोज आता और मिट्ठू के पास घंटों चुपचाप बैठा रहता। उसे शेर, भालू, चीते आदि से कोई प्रेम न था। वह मिट्ठू के लिए घर से चने, मटर, केले लाता और खिलाता। मिट्ठू भी उससे इतना हिल गया था कि बगैर उसके खिलाए कुछ न खाता। इस तरह दोनों में बड़ी दोस्ती हो गई।

एक दिन गोपाल ने सुना कि सर्कस कंपनी वहां से दूर शहर जा रही है। यह सुनकर उसे बड़ा रंज हुआ। वह रोता हुआ अपनी मां के पास गया और बोला, 'अम्मा, मुझे एक अठन्नी दो, मैं जाकर मिट्ठू को खरीद लाऊं। वह न जाने कहां चला जाएगा। फिर मैं उसे कैसे देखूंगा? वह भी मुझे न देखेगा तो रोएगा।' मां ने समझाया, 'बेटा, बंदर किसी को प्यार नहीं करता। वह तो बड़ा शैतान होता है। यहां आकर सबको काटेगा, मुफ्त में उलाहने सुनने पड़ेंगे। लेकिन लड़के पर मां के समझाने का कोई असर न हुआ। वह रोने लगा। आखिर मां ने मजबूर होकर उसे अठन्नी निकालकर दे दी।

अठन्नी पाकर गोपाल मारे खुशी के फूल उठा। उसने अठन्नी को मिट्टी से मलकर खूब चमकाया, फिर मिट्ठू को खरीदने चला। लेकिन मिट्ठू वहां दिखाई न दिया। गोपाल का दिल भर आया - मिट्ठू कहीं भाग तो नहीं गया? मालिक को अठन्नी दिखाकर गोपाल बोला, 'अबकी बार आऊंगा तो मिट्ठू को तुम्हें दे दूंगा। गोपाल निराश होकर चला आया और मिट्ठू को इधर-उधर ढूंढने लगा। वह उसे ढूंढने में इतना मगन था कि उसे किसी बात की खबर न थी। उसे बिल्कुल न मालूम हुआ कि वह चीते के कठघरे के पास आ गया था। चीता भीतर चुपचाप लेटा था।

गोपाल को कठघरे के पास देखकर उसने पंजा बाहर निकाला और उसे पकड़ने की कोशिश करने लगा। गोपाल तो दूसरी तरफ ताक रहा था। उसे क्या खबर थी कि चीते का तेज पंजा उसके हाथ के पास पहुंच गया है। करीब इतना था कि चीता उसका हाथ पकड़कर खींच ले कि मिट्ठू न मालूम कहां से आकर उसके पंजे पर कूद पड़ा और पंजे को दांतों से काटने लगा।

चीते ने दूसरा पंजा निकाला और उसे ऐसा घायल कर दिया कि वह वहीं गिर पड़ा और जोर-जोर से चीखने लगा। मिट्ठू की यह हालत देखकर गोपाल भी रोने लगा।

दोनों का रोना सुनकर लोग दौड़ पड़े, पर देखा कि मिट्ठू बेहोश पड़ा है और गोपाल रो रहा है। मिट्ठी का घाव तुरंत धोया गया और मरहम लगवाया गया। थोड़ी देर में उसे होश आ गया। वह गोपाल की ओर प्यार की आंखों से देखने लगा, जैसे कह रहा हो कि अब क्यों रोते हो? मैं तो अच्छा हो गया।

कई दिन मिट्ठू की मरहम-पट्टी होती रही और आखिर वह बिल्कुल अच्छा हो गया। गोपाल अब रोज आता और उसे रोटियां खिलाता। आखिर कंपनी के चलने का दिन आया। गोपाल बहुत दुखी था। वह मिट्ठू के कठघरे के पास खड़ा आंसू-भरी आंख से देख रहा था कि मालिक ने आकर कहा, 'अगर मिट्ठू तुमको मिल जाए तो तुम क्या करोगे?'

गोपाल ने कहा, 'मैं उसे अपने साथ ले जाऊंगा, उसके साथ-साथ खेलूंगा, उसे अपनी थाली में खिलाऊंगा, और क्या।'

मालिक ने कहा, 'अच्छी बात है, मैं बिना तुमसे अठन्नी लिए ही इसे तुम्हें देता हूं। गोपाल को जैसे कोई राज मिल गया। उसने मिट्ठू को गोद में उठा लिया, पर मिट्ठू नीचे कूद पड़ा और उसके पीछे-पीछे चलने लगा। दोनों खेलते-कूदते घर पहुंच गए।

- मुंशी प्रेमचंद *साभार:* www.hindi.webdunia.com

पाठक कहते हैं

हम नए कवियों / लेखकों से उनके लेखों / काव्य रचनाओं के नवनीत ऑस्ट्रेलिया हिन्दी डाइजेस्ट में पर्काशन हेतु योगदान की अपेक्षा करते हुए आमंत्रित करते हैं। सभी लेख / काव्य रचनाएँ नवनीत ऑस्ट्रेलिया हिन्दी डाइजेस्ट में निशुल्क पर्काशित होंगी।

-संपादक मंडल, नवनीत ऑस्ट्रेलिया हिन्दी डाइजेस्ट

हमें भवन ऑस्ट्रेलिया की ईमारत निर्माण परियोजना के लिए आर्थिक सहायता की तलाश है।

कृपया उदारता से दान दें।

नोट: हम अपने पाठकों की स्पष्टवादी, सरल राय आमंत्रित करते हैं।

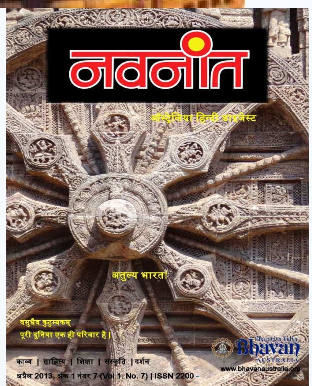

हमारे साथ विज्ञापन दें!

नवनीत ऑस्ट्रेलिया हिन्दी डाइजेस्ट में विज्ञापन देना आपकी कंपनी के ब्रांड के लिए सबसे अच्छा अवसर प्रदान करता है और यह आपके उत्पादों और / या सेवाओं का एक सांस्कृतिक और नैतिक संपादकीय वातावरण में प्रदर्शन करता है।

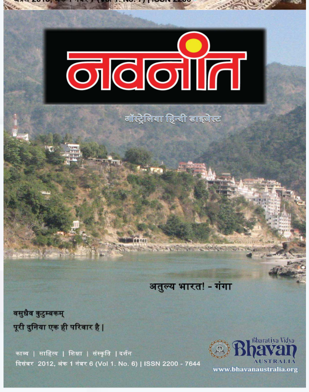

भवन ऑस्ट्रेलिया भारतीय परंपराओं को ऊँचा रखने और उसी समय बहुसंस्कृतिवाद एकीकरण को प्रोत्साहित करने का मंच है।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें : info@bhavanaustralia.org

महात्मा गाँधी कहते हैं

क्रोध को जीतने में मौन सबसे अधिक सहायक है ।

गरीबी दैवी अभिशाप नहीं बल्कि मानवरचित षडयन्त्र है ।

वास्तविक सोन्दर्य ह्रदय की पवित्रता में है ।

जो लोग अपनी प्रशंसा के भूखे होते हैं, वे साबित करते हैं कि उनमें योग्यता नहीं है ।

बुद्ध ने अपने समस्त भौतिक सुखों का त्याग किया क्योंकि वे संपूर्ण विश्व के साथ यह खुशी बांटना चाहते थे जो मात्र सत्य की खोज में कष्ट भोगने तथा बलिदान देने वालों को ही प्राप्त होती है।

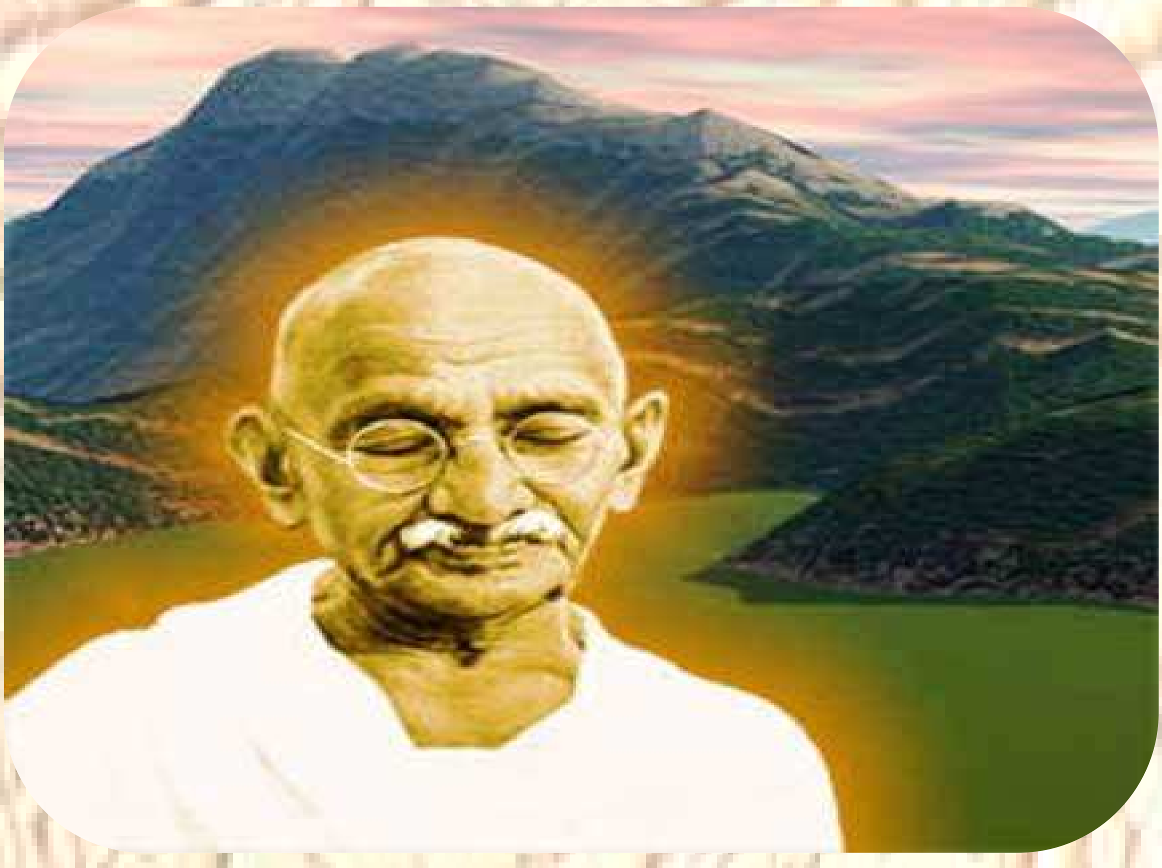

taxation & business guru

Taxation Guru - using their knowledge and expertise to stay ahead of the every changing taxation legislation.

Whether you're a company, partnership, trust or sole trader, you need help with Super, Salary packages, Fringe benefits, Investments and deductions.

Call the Taxation Guru, the power to help you make the right decisions.

We endeavour to take the burden off your shoulders and make life easy by providing a broad range of tax related services.

Contact us at:
Suite 100, Level 4, 515 Kent Street, Sydney 2000
t: 1300 GURU4U (487848) & +612 9267 9255
e: gambhir@bmgw.com   www.taxationguru.com.au

THE TAX INSTITUTE

CHARTERED TAX ADVISER

BMG

GROUP

www.taxationguru.com.au